सेंटर फॉर स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन

"राजस्थान की सामाजिक संस्थाओं के साथ आयोजित स्टोरी टेलिंग वर्कशॉप में तैयार हुई कहानियों का संकलन"

बदलाव की बयार

VIKAS SAMVAD

NATIONAL COALITION FOR NATURAL FARMING

नमस्कार,

यह पुस्तिका आपके हाथों में है। इसमें आपको मिट्टी का सौंधापन मिलेगा, कुदरत की हरियाली, मेहनत के रंग। आखिर यह अलग कैसे है? इसलिए क्योंकि इसको गढ़ने वाले हाथ कोई प्रोफेशनल लेखक, स्टोरी टेलर या पत्रकार नहीं हैं। यह वह सब साथी हैं जिन्होंने सामाजिक बेहतरी का काम अपने हाथों में लिया और अपनी छोटी–छोटी दुनिया में ऐसे काम किए जिनकी इस समाज में जरूरत है। यह सब काम और ज्यादा संख्या में हों, हर कहीं हों, इसी मकसद से इन्हें इस शक्ल में लाया जा रहा है।

विकास संवाद को एन.सी.एन.एफ. (राजस्थान) के साथ राजस्थान की सामाजिक संस्थाओं के साथियों के साथ स्टोरी टेलिंग कार्यशाला के तहत तीन दिन तक संवाद करने का मौका मिला। सीखने–सिखाने का अवसर मिला। तीन दिन तक निरंतर कुछ सीखें साझा हुईं। और उसका परिणाम कहानियों के रूप में आपके सामने है।

यह कहानियां हैं, बिलकुल जमीनी कहानियां, इन कहानियों को पढ़कर ऐसा लगेगा कि यह कर सकती हैं तो हम भी कर सकते हैं। और इसीलिए भी इस बुकलेट को हम आगे बढ़ा रहे हैं ताकि सामाजिक संस्थाओं के द्वारा किए जा रहे काम को एक पहचान मिले। इन कहानियों में आपको बहुत तरह के शेड्स नजर आएंगे।

हम इन्हें बिना किसी ज्यादा संपादन या बदलाव के उनके अपने खुरदुरेपन के साथ सामने रख रहे हैं, आप भी इन्हें वैसे ही स्वीकार कीजिए और बताईये कि आपको यह कैसी लगीं? आपके सुझावों का हमें इंतजार रहेगा।

विकास संवाद का सेंटर फॉर स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन देश में सामाजिक संस्थाओं की संचार क्षमतावृद्धि पर विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। इसके लिए हमने ऐसे मॉडयूल और प्रशिक्षकों की टीम तैयार की है। स्टोरी राइटिंग, फोटो, वीडियो, डिजाइनिंग, सोशल मीडिया के उपयोग पर हम व्यावहारिक अभ्यास के साथ हम प्रशिक्षण आयोजित करते हैं, ओर हैंडहोल्डिंग भी की जाती है। इस बारे में आपको किसी मदद की जरूरत हो तो हमसे संपर्क कर सकते हैं।

सादर।

टीम विकास संवाद

शीर्षक	:	**बदलाव की बयार**
कहानियां और फोटो	:	**सभी भागीदार साथी**
संपादन	:	**राकेश कुमार मालवीय, निधि तिवारी, कार्तिक शर्मा**
सहयोग	:	**नेशनल कोलिशन फॉर नेचुरल फार्मिंग एन.सी.एन.एफ. (राजस्थान)**
डिज़ाइन	:	**अफ़ज़ाल अली**
मार्गदर्शन	:	**सचिन कुमार जैन**
पता	:	**विकास संवाद, ए-5, आयकर कालोनी, भोपाल**
वर्ष	:	**2024**
ई मेल	:	**office@vssmp.org**
वेबसाइट	:	**www.vssmp.org**
आयोजक	:	**विकास संवाद**

विकास संवाद

एक सामाजिक शोध, प्रशिक्षण, दस्तावेजीकरण और पैरवी समूह है। कोशिश है कि समाज के मुद्दों को समाज के नज़रिए से देखा-समझा जाए। विषयों को बहस के लिए विचार-मूल्य-तथ्य-प्रमाण के कसौटी पर कसा जाए। समूह अध्ययन-विश्लेषण और सामग्री तैयार करने का काम कर रहा है। सामाजिक कार्यकर्ताओं और जनसंचारकों के साथ निरंतर संवाद करते रहना एक रणनीति है। अब तक लगभग 20 हज़ार पन्नों की सामग्री को तैयार करके “सबके आधिकारिक उपयोग के लिए” ओपन प्लेटफार्म पर रखा है। समाज के मूल सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक मुद्दे एक सोच, दृष्टि और नज़रिए के मकसद से 250 से अधिक इंफो पैक तैयार किए हैं। लगातार सोलह सालों से सामाजिक सरोकारों और संवैधानिक मूल्यों पर फैलोशिप की प्रक्रिया जारी है, अब तक 125 से अधिक संचारक जुड़ चुके हैं. अस्सी से अधिक किताबों का प्रकाशन किया है। सरकार के साथ मिलकर सामाजिक नेतृत्व के लिए पाठयक्रम के मैदानी फील्डवर्क मैनुअल भी तैयार किए हैं। सामाजिक संस्थाओं के संचार पर क्षमतावृध्दि कार्यक्रम पर निरंतर काम किया जा रहा है।

विवरणिका

क्रं.	विवरण	पेज नं.
1.	अखबार बोला पहले सबूत दो, फिर छापी पहले पन्ने पर खबर	1
2.	बंजर धरती ने यूं ओढ़ी हरियाली की चादर	4
3.	मुर्गी पाली तो मजदूरी से राहत मिली, परिवार की आय भी बढ़ी	7
4.	श्यामगढ़ गांव की आत्मनिर्भर महिलाओं की सफलता की कहानी	10
5.	मियासा गांव में हलमा से निकला आदिवासी समुदाय की समस्याओं का हल!	12
6.	गोपालपुरा गांव के चारागाह की विकास की गाथा व संघर्ष की दास्तान	15
7.	उन्नत खेती ने किया मूली देवी को कर्जमुक्त	18
8.	अंधेरे में आशा की एक किरण	21
9.	प्रयास, शुरुआत और सफलता की तस्वीर	23
10.	महिला की इच्छा ने बदली अपनी और समुदाय की तस्वीर	26
11.	जल पुनर्भरण के लिए सामुदायिक जागरूकता	30
12.	चौका प्रणाली ने बदल दी लोगों की तकदीर...	32
13.	खुशहाली की ओर बढ़ते कदम	35
14.	लड़कियों के स्वास्थ्य को लगे पंख	37
15.	कटोरी	40
16.	चेहरे पर छाई मुस्कान	43
17.	साहस और संघर्ष से जीतती पूनी बाई	46
18.	लोग एकजुट हुए तो पानी की समस्या का भी निकला हल	51
19.	हेल्थ वैन से गांव तक पहुंचा सेहत का लाभ	53

अखबार बोला पहले सबूत दो, फिर छापी पहले पन्ने पर खबर

खेमचन्द जोनवाल

भडाज गांव बना हाईटेक खेती का रोल मॉडल, सूने गांव में लौटी खुशहाली

राजस्थान के भडाज गांव के लोग जब अखबार वालों के पास अपनी खबर छपवाने पहुंचे तो पत्रकारों को उनकी बातों पर यकीन ही नहीं हुआ। एक सूखे और पलायन वाले इलाके में हाईटेक खेती करने वाली बात पर वे भरोसा ही नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने कहा कि "हम आपके गांव में आकर सबूत देखेंगे, उसके बाद ही आपकी खबर छापेंगे।"

गांव वालों ने कहा- बिलकुल आईये। कुछ दिनों बाद अखबार वाले आए भी। गांव देखा, लोगों से बात की। खेती में नई तकनीक के प्रयोग को देखा और हैरान रह गए। जो पत्रकार पहले लोगों की बात पर यकीन नहीं कर पा रहे थे, उन्हीं ने प्रमुखता के साथ पहले पन्ने पर गांव की खबर छापी। अपनी कर्मठता और प्रयोगधर्मिता के चलते यह गांव आज चर्चा में है।

यह सच्ची कहानी है राजस्थान के अलवर जिले में थानागाजी ब्लॉक से लगभग 12 किमी की दूरी पर बसे भडाज गांव की। यह इलाका अरावली पर्वतमाला की तलहटी में बसा है। गांव में 396 परिवार रहते हैं। इनमें गुर्जर, मीणा, ब्राह्मण, जांगिड और अनुसूचित जाति के लोग शामिल हैं। गांव की कुल जनसंख्या 1678 है। इनमें ज्यादातर किसान हैं।

जिन गांववालों के पास जमीन नहीं है, वे तो पहले से ही पलायन पर जाते थे, लेकिन पिछले पांच वर्षों से सिंचाई के लिए पानी की कमी के चलते बाकी लोग भी पलायन के लिए मजबूर हो गए थे। गांव में 116 किसान परिवार पलायन करते थे। यानी गांव की आबादी से करीब 16-20 प्रतिशत लोग कमाने बाहर चले जाते थे। कम पानी से खेती में फसल का उत्पादन कैसे करें? और परिवार को कैसे पालें? यह सवाल वहां के लोगों को बहुत परेशान कर रहा था।

भड़ाज गांव के लोग बाहर जाकर मजदूरी के लिए मजबूर हो गए थे। ऐसे में घर को संभालना, पशुओं की देखरेख, खेती के छोटे-मोटे काम और सिंचाई (पानी चलाना) करना महिलाओं की जिम्मेदारी बन गया। पहाड़ों के बीच गांव होने के कारण जंगली जानवरों का डर भी बहुत ज्यादा होता है। ऐसे में रात के समय महिलाओं को सिंचाई करने में बहुत परेशानी होती थी।

जब सामाजिक संस्था इब्तिदा को इन समस्याओं के बारे में पता चला तो उसने इस गांव में पहल करने की ठानी। इस संस्था की स्थापना 18 नवम्बर 1997 को मेवात क्षेत्र में शिक्षा से वंचित बालिकाओं को तालीमशाला से जोड़ने से हुई थी। वर्तमान में यह संस्था महिला व बालिका सशक्तिकरण पर काम कर रही है। संस्था इस इलाके में स्वयं सहायता समूह, महिला आजीविका संवर्धन, महिला अधिकार, महिला स्वास्थ्य, बालिका संदर्भ केंद्र, बालिका शिक्षा, वर्षा जल प्रबंधन आदि पर सक्रिय है।

वर्ष 2020 में महिला आजीविका संवर्धन कार्यक्रम के तहत इस गांव में आजीविका पाठशाला बनाई गयी। वहां हाईटेक कृषि व सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियों, उन्नत पशु प्रबंधन, महिला उद्यमी, बकरी पालन आदि के बारे में महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। आजीविका पाठशाला के तहत उन्हें समझाया गया कि उन्नत कृषि व सूक्ष्म सिंचाई के उपयोग करने से कम पानी में भी खेती हो सकती है। इसमें समय और मेहनत भी कम लगती है।

शुरुआत में यह समझाना आसान नहीं था। गांव की महिला किसान भगवती ने कहा " बूँद बूँद पाणी सु कोई फसल होवे छ काई बावला बणावा ने लागरिया छो" तो अन्य लोगों ने भी यही बात कही कि बूंद-बूंद पानी से फसल कैसे पैदा होगी?

संस्था के कार्यकर्ता भी इसे एक चुनौती के रूप में ही ले रहे थे। उन्होंने तमाम कोशिशों के बाद गांव की मूलीदेवी नाम की महिला किसान को प्रेरित किया। वह तैयार हुईं। उनके खेत में ड्रिप सिस्टम के साथ लो-टनल मलचिंग का एक मॉडल तैयार किया गया। इस पहल का बहुत अच्छा परिणाम सामने आया। जब लोगों ने अपनी आंखों से यह मॉडल देखा तो उन्हें यकीन होने लगा कि बूंद-बूंद से भी खेती संभव है।

इसके बाद उन्हें हाईटेक कृषि तकनीक से सिंचाई और इससे उत्पादन में बढ़ोत्तरी के बारे विस्तार से बताया गया। उन्हें कम पानी व कम खर्चे से सब्जी और अन्य फसलों के उत्पादन का प्रशिक्षण भी दिया गया। धीरे-धीरे यह मॉडल सफल होने लगा और गांव व ढाणियों में 192 किसानों ने लगभग 79 हेक्टेयर भूमि में इस प्रणाली को अपना लिया।

आज वहां कई सफल किसान हैं जो इस मॉडल से सफलतापूर्वक खेती कर रहे हैं। राजन्ती ने इस प्रणाली को अपनाकर एक फसल में 2.5 लाख की आमदनी की। उन्होंने 2.5 लाख डाउन पेमेंट भरकर 5 लाख 83 हजार का फार्मट्रेक ट्रैक्टर फाइनेंस पर खरीद लिया। इसके लिए 18,560 रुपए की मासिक क़िस्त भरकर उसे फ्री भी कर लिया है। अन्य किसान भी इस हाईटेक प्रणाली का फायदा ले रहे हैं और 1 बीघा भूमि में 2-3 लाख रुपए तक की कमाई कर रहे हैं।

पत्रिका

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति ने बदल दिया किसानों का जीवन

हाईटेक कृषि: कम पानी व खर्चे से सब्जी उत्पादन कर लाखों कमा रहे किसान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

तकनीक अपनाने वालों की बढ़ रही संख्या

इब्तिदा संस्था में आजीविका कार्यक्रम के लीड और हाईटेक खेती को आगे बढ़ाने वाले डॉ. राजेश अग्रवाल कहते हैं कि "इब्तिदा अलवर जिले के 6 ब्लॉक के 292 गाँवों में महिला आजीविका संवर्धन कार्यक्रम चला रही है। हमारा सपना है कि कम पानी व उन्नत तरीकों से खेती, उन्नत पशु प्रबंधन, महिला उद्यमी, मुर्गीपालन जैसे अन्य कार्यो से महिलाओं की आजीविका बढ़े। यहां लोग लो-टनल, मलचिंग, ड्रिप, लेजर, रेनगन, मचान, स्टैकिंग, नर्सरी आदि हाईटेक तकनीक को अपनाकर खेती कर रहे हैं और खेती को व्यवसाय के रूप में देख रहे हैं।"

आज भड़ाज गांव पूर्ण रूप से हाईटेक मॉडल बन गया है। सामान्य फसलों को छोड़कर वहां के लोग सब्जी व नगदी फसलों को अपनाने लग गए हैं। वहां के किसान अपनी सब्जियों को लोकल मंडी के साथ ही जयपुर, दिल्ली तक बेचते हैं। जो लोग पलायन करते थे वो अब गांव में ही रहकर खेती कर रहे हैं। पहले जहां करीब 20 प्रतिशत परिवार पलायन करते थे, वहीं अब केवल 4 प्रतिशत परिवार ही पलायन करते हैं, वह भी स्थायी रोजगार की वजह से। जो गांव कभी घरों में लोगों के नहीं रहने के कारण सूना-सूना सा लगता था आज वहां गली नुक्कड़ों पर लोग बैठकर चर्चाएं करते मिलते हैं।

गांव के किसान कमलेश, भवानी, रामजीलाल, लोकेश, महेंद्र, भगवती, प्रेम देवी आदि का कहना है कि बूंद-बूंद सिंचाई से पैदा हुई सब्जियों को बाजार में अच्छा भाव मिलता है। अब तो ड्रिप आदि सिस्टम खरीदने के लिए शाहपुरा, जयपुर जाने की भी जरूरत नहीं है। लोकल बाजार में ही इनकी दुकानें खुल गई हैं। इस गांव में जिनके पास भी जमीन है वो इन साधनों से ही सिंचाई कर फसल पैदा कर रहे हैं। भडाज गांव की आजीविका सखी राजन्ती देवी और महिला किसान लोगों को इसके लिए प्रेरित करते हैं। संस्था का लक्ष्य भडाज को पूर्णत: रसायनरहित खेती की ओर ले जाना है। इसके लिए लोगों को पशुपालन व समन्वित कीट प्रबंधन के बारे में जानकारियां दी जा रही हैं।

इस बदलाव का ही नतीजा है कि पहले इस गांव के लोग पलायन पर जाकर महीने में 15-20 हजार तक कमा पाते थे। बाहर जाने की वजह से उनका रहने-खाने आदि का खर्चा बहुत ज्यादा हो जाता था। लेकिन अब हाईटेक खेती को अपनाकर गांववाले न केवल अपने ही परिवार के साथ रह रहे हैं, बल्कि तमाम खर्च काटकर भी हर महीने 30 हजार रुपए तक कमा ले रहे हैं।

■ **इब्तिदा संस्था,** अलवर

बंजर धरती ने यूं ओढ़ी हरियाली की चादर

उदय कुमार साव

मोहम्मद शाकिब खान

राजस्थान के दिल में, चंबल नदी के किनारे बसा एक छोटा सा गांव है, ओंड। यह गांव करौली जिले के मंड्रायल ब्लॉक में बीहड़ क्षेत्र के अंतर्गत आता है। गांव कुल 1224.9 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला है। ओंड गांव में 246 परिवार हैं। यहां की कुल जनसंख्या 1275 है। इस समुदाय की खासियत इसकी विविधता में निहित है, जहाँ लगभग 56% लोग अनुसूचित जाति और जनजाति से संबंध रखते हैं, जबकि बाकी लोग सामान्य वर्ग से हैं।

यहां बहुत से छोटे और सीमांत किसान हैं, जो बारिश पर अधिक निर्भर थे। उनकी ज़मीन समतल न होने के कारण, मानसून के दौरान पानी खेतों में नहीं रुकता था। तेज़ पानी के बहाव के कारण मिट्टी भी धीरे-धीरे कटने लगी, जिससे किसानों को काफ़ी नुकसान उठाना पड़ा। इनकी फ़सलें भी कमज़ोर हो गईं और आय भी कम होने लगी। इसका असर यह हुआ कि लोगों को ग़रीबी का सामना करना पड़ा, और उनमें गुस्सा भी बढ़ने लगा।

इस ग़ुस्से की वजह से कई किसान लकड़ी की तस्करी में लग गए। पेड़ों की कटाई में कमाई की वजह से बहुत से किसान इसमें शामिल हो गए, जिससे यहां के जंगल भी धीरे-धीरे नष्ट होने लगे। इसके साथ ही लोग रोज़गार की खोज में शहरों की ओर पलायन करने लगे।

जीवन की जद्दोजहद

ओंड के लोग मुश्किलों के आदी हो चुके थे। केवल 20% ज़मीन ही खेती के लायक थी, बाकी मिट्टी कटाव से खत्म हो चुकी थी। पानी की कमी ने उनकी खेती को मुश्किल बना दिया था। फसलें सूख गईं और उनके बच्चों के बेहतर भविष्य के सपने भी मुरझा गए। अनुसूचित जातियों और जनजातियों से आने वाले लोगों के लिए तो यह संघर्ष और भी कठिन था।

उम्मीद की किरण: जन जागृति ग्राम विकास समिति का गठन

लेकिन इसी निराशा के बीच, कुछ अद्भुत हुआ। सृजन नामक एक गैर-लाभकारी संगठन, जो जल, जंगल, ज़मीन, जानवर और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर काम करता है और ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है, यहां काम करने पहुंचा। संगठन ने इस गांव में एक नई आशा की किरण जगाई। हालांकि, सृजन के लिए यह कार्य आसान नहीं था। उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले, उन्हें यहां के किसानों का विश्वास जीतना पड़ा। उनके सहयोग से गांववालों ने जन जागृति ग्राम विकास समिति का गठन किया, जिसने गांव में बदलाव की नींव रखी। गांव के 98 सदस्यों ने ₹100-₹100 मिलाकर एक कोष बनाया ताकि गांव को बचाने के लिए खुद पहल की जा सके। उन्हें अहसास हो गया था कि अगर उन्हें अपने गांव को बचाना है, तो खुद ही कुछ करना होगा।

बदलाव की लड़ाई: चुनौतियाँ और मेहनत

ओंड को बदलने का सफर बिल्कुल भी आसान नहीं था। सबसे पहले, गांववालों को यह समझाना जरूरी था कि नई विधियाँ उनके लिए कैसे लाभकारी होंगी। कई लोग संदेह में थे क्योंकि उन्होंने पहले भी ऐसी कई पहलों को असफल होते देखा था। इसलिए सबसे पहले उन्हें एक्सपोज़र विज़िट पर ले जाया गया ताकि वे समझ सकें कि फील्ड बंडिंग कैसे की जाती है और इसके क्या फायदे होते हैं।

शुरुआत में गांव में कुछ किसानों ने फील्ड बंडिंग की। जब बाकी लोगों ने इसके परिणाम महसूस किए, तो वे भी आगे आने लगे। जब अधिकतर किसान फील्ड बंडिंग के लिए इच्छुक हो गए, तब जन जागृति ग्राम विकास समिति ने किसानों के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सबसे पहले उन किसानों की फील्ड बंडिंग की गई जो अधिक जरूरतमंद थे।

फील्ड बंडिंग की मदद से मिट्टी के बहाव को रोका गया। इसके साथ ही पानी भी खेतों में ही रुकने लगा। इस वजह से किसानों की फ़सलों की पैदावार बढ़ने लगी। सोलर सिंचाई और माइक्रो इरिगेशन जैसी नई तकनीक को समझने और अपनाने में समय लगा, लेकिन गांववालों की मेहनत और लगन आखिरकार रंग ले ही आयी।

फील्ड बंडिंग, जिसे मेढ़बंदी भी कहा जाता है, खेत में पानी के संरक्षण और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए की जाती है। इसे मिट्टी की मदद से खेत के किनारों पर उभरी

हुई मेढ़ या बांध बनाकर किया जाता है। मिट्टी से मेढ़बंदी के लिए ट्रैक्टर का उपयोग होता है। चटाई (ट्रॉली) की मदद से मिट्टी को लगभग 50 मीटर की दूरी से मेढ़ पर डाला जाता है। आमतौर पर 1 मीटर ऊँचा बंड बनाया जाता है, जो पानी और मिट्टी को रोकने में सहायक होता है।

मेढ़बंदी के लिए किसान को कुल लागत का 20% देना होता है, जबकि शेष 80% लागत संस्था देती है। इस तरह, किसान को आर्थिक बोझ से राहत मिलती है और वे जल संरक्षण और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

हेक्टेयर भूमि में फील्ड बंडिंग से से मिट्टी का कटाव रुक गया, और बंजर ज़मीन फिर से उपजाऊ हो गई। सोलर पंपों से साल भर सिंचाई संभव हो गई, जिससे परिदृश्य बदल गया। माइक्रो इरिगेशन तकनीक ने पानी की हर बूंद का सही उपयोग सुनिश्चित किया, जिससे फसलें स्वस्थ हुईं और उपज बढ़ी।

अनीता शर्मा, एक स्थानीय किसान, याद करती हैं कि कैसे उनकी बंजर ज़मीन ने फिर से फसलें उगाना शुरू किया। "हमने उम्मीद खो दी थी, लेकिन अब हमारी ज़मीन उपजाऊ है, और हमारे बच्चे स्वस्थ हैं।"

इसी तरह सोलर पैनल लगाने के लिए किसान को कुल लागत का 50% वहन करना होता है, जबकि शेष 50% लागत संस्था देती है। पहले जब सोलर पंप नहीं थे, तब किसान केवल खरीफ के मौसम में बाजरा उगा पाते थे, जो पूरी तरह से मानसून पर निर्भर था। लेकिन सोलर पंप लगाने के बाद अब किसानों की मानसून पर निर्भरता कम हो गई है। अब किसान रबी के मौसम में भी सरसों की खेती कर पाते हैं, जिससे उनकी आमदनी में वृध्दि हुई है। सोलर पंप ने सिंचाई के लिए पर्याप्त और निरंतर पानी उपलब्ध कराना संभव बना दिया है, जिससे किसानों को पूरे साल फसल उगाने का अवसर मिला है। पिछले साल सरसों बेचने से किसानों को ₹50,000 का मुनाफा हुआ।

बंजर ज़मीन से हरे-भरे खेतों तक

धीरे-धीरे परिणाम सामने आने लगे। 233.88

मिथलेश, एक और किसान, कहते हैं: "सोलर पैनल ने सब कुछ बदल दिया है। अब हम अपने खेतों की सिंचाई कर सकते हैं और साल भर फसलें उगा सकते हैं।"

एक गांव का रूपांतरण

आज, ओंड एक पुनर्जीवित गांव है। जो खेत कभी बंजर थे, वे अब हरे-भरे हो गए हैं। जन जागृति ग्राम विकास समिति, SRIJAN के सहयोग से, ने न केवल भूमि को बल्कि उन लोगों के जीवन को भी बदल दिया है जो ओंड को अपना घर कहते हैं।

यह कहानी उम्मीद, दृढ़ता और सामुदायिक शक्ति की है। ओंड गांव ने साबित कर दिया है कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो वे सबसे बड़ी चुनौतियों को भी पार कर सकते हैं।

■ **सृजन संस्था,** करौली

मुर्गी पाली तो मजदूरी से राहत मिली, परिवार की आय भी बढ़ी

अजरूदीन

मेरा नाम सुनीता है। मैं राजस्थान के अलवर जिले के, गोविन्दगढ़ ब्लाक के नयाणा गांव में रहती हूँ। यह अलवर शहर मुख्यालय से 50 किमी. दूर बसा है। मेरे गांव में विभिन्न समुदाय के लगभग 250 परिवार हैं। मेरे परिवार में मेरे पति, 2 लड़की और एक लड़का है। हम कुल 5 सदस्य हैं। हमारी एक बेटी 8वीं क्लास, दूसरी 7वीं क्लास में और लड़का 11वी क्लास में गांव में ही सरकारी स्कूल में पढ़ रहे हैं।

यह बात है आज से 2 साल पहले की। मेरे पास आय के स्रोत के रूप में पुश्तैनी 1.5 बीघा जमीन और एक देशी गाय थी। इसके अलावा कभी-कभी अपने या दूसरे गांव में खेती में मजदूरी का काम कर लेती थी। मेरे पति पिछले 3 साल से बीमार थे। परिवार का खर्चा चलाने का जिम्मा मेरे ऊपर था। इस आय से परिवार का खर्चा चलाना मुश्किल हो रहा था परिवार के सभी सदस्य परेशान थे।

एक दिन मैं घर से पशुओं का चारा लेने जंगल जा रही थी। रास्ते में गांव की परिचित महिला से घर की पारिवारिक स्थिति पर बातचीत करने लगी। मेरी बातों को सुनने के बाद उस महिला ने इब्तिदा संस्था और समूह के बारे बताया। उसके बाद मैं समूह की बैठक देखने और उनसे चर्चा करने गई। इस बैठक में मेरी मुलाकात संस्था के कार्यकर्ता से हुई। मैंने अपनी परिस्थिति को लेकर अन्य महिलाओ तथा संस्था के कार्यकर्त्ता से बातचीत की। संस्था के कार्यकर्ता ने समूह के नियम और शर्तों के बारे में मुझे विस्तार से बताया। सभी की सहमति के बाद मैंने समूह में जुड़ने का मन बनाया। अपनी 100 रुपए की समूह बचत जमा करना शुरू किया। समूह से जुड़ने के बाद महिला किसान पाठशाला में भी जाना शुरू कर दिया। बात जून 2023 की है। संस्था के कार्यकर्ता ने महिला किसान पाठशाला में चर्चा की कि परिवार की आजीविका बढ़ाने के लिए जो महिलाएं मुर्गीपालन का काम करवाना चाहती हैं, उन्हें कुछ आर्थिक मदद और ट्रेनिंग भी संस्था करेगी। मैंने सोचा कि ऐसे कोन मदद करता है। लेकिन विश्वास करना मज़बूरी था। मैंने इस बारे में कार्यकर्ता से बातचीत की। इसके बाद अपने परिवार को मुर्गीपालन के बारे में बताया।

मुझे परिवार से मुर्गीपालन की सहमति मिल गई। लेकिन अब बात थी कि मुर्गीपालन करना है तो मुर्गीघर बनाने के लिए 12,000 से 15,000 रुपए शेड बनाने के लिए चाहिये। मैंने हार नही मानी और समूह में बात की। 15,000 रुपये का समूह से लोन लिया गया। इसके बाद मैंने अन्य महिलाओं के साथ मिलकर संस्था से मुर्गीपालन की ट्रेनिंग भी ली। इस दौरान मैंने अन्य महिलाओं के अनुभव भी जाने। मुझे बहुत अच्छा लगा।

अब मैंने ठान लिया कि मुझे मुर्गीपालन से परिवार की हालत में बदलाव करना है। जुलाई 2023 में मैंने संस्था के दिशा-निर्देश में 10*10 फीट का मुर्गीपालन शेड कार्यकर्ता की निगरानी में बना लिया। शेड बनाने के 5 दिन बाद संस्था से मुझे क्रायलर एफएफजी नस्ल के 40 चूजे 250 ग्राम औसत वेट वाले और 2 फीडर, 2 ड्रिंकर तथा 50 किलो फीड चूजों के लिए उपलब्ध करवाया गया। इसके साथ ही करीब 6500 रुपये की मदद की गई।

इसके बाद मैं संस्था के दिशा-निर्देश में चूजों का रखरखाव, पालन-पोषण करने लगी। उन्होंने कई नए तरीके भी सिखाए। मुर्गीपालन को लेकर मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़ी। लेकिन मुझे तो पैसा कमाना था , अच्छे रखरखाव के बाद 30 दिन के बाद मुर्गे/मुर्गियों का वजन 1.25 किलो के आसपास होने लगा तो मैंने संस्था के कार्यकर्ता उसे बेचने पर बातचीत की। इस तरह एक माह बाद मैंने एक मुर्गा 350 रुपए में बेचा। इस तरह मुर्गीपालन से मेरी पहली कमाई हुई। इस पर मुझे और मेरे परिवार को बहुत खुशी हुई।

इसके बाद मैंने धीरे-धीरे 39 मुर्गे, मुर्गियों को 13650 रुपये में बेच दिया। इससे मुझे 6000 रुपये का मुनाफा हुआ। इसके बाद अगस्त माह 2023 में 40 चूजे संस्था से और 20 स्वयं के रुपये के कुल 60 चूजे दूसरी बार शेड में रखे गए। फिर से ट्रेनिंग लेकर पालन-पोषण किया। अगले 2 माह के अन्दर 58 मुर्गे, मुर्गियां 20300 रुपये में गांव व दूसरे गांव के ग्राहक लेकर गए। इससे मुझे 9500 रुपये का मुनाफा हुआ।

इस प्रकार मेरे परिवार की खुशी दुगुनी होने लगी। मैंने इसी प्रकार तीसरी बिक्री के बाद 250 चूजों को शेड में रखा। कुछ दिनों बाद 145 बड्र्स को 49450 रुपये में बेचा।

इससे मुझे 20100 रुपये का मुनाफा हुआ। इसी प्रकार मैं मुर्गीपालन करती रही, और फरवरी 2024 में मैंने शेड को 20x40 के आकार का बनवाया दिया। इस बार 400 चूजों से मुर्गीपालन काम बढ़ाया गया। संस्था से ट्रेनिंग की मदद से 2 माह में 370 बड्र्स को 1,11,000 रुपये में मंडी और कुछ लोकल मार्केट में बेच दिया गया। इस बिक्री से मुझे 40100 रुपये का फायदा हुआ।

इस प्रकार मुर्गीपालन का काम अब मेरे लिए नियमित आय का स्रोत बन गया है। इस आय को देखकर परिवार वाले भी काम में मेरा हाथ बंटाने लगे हैं। जिससे अब मुझे काम करना आसान हो गया है। मुर्गीपालन से नियमित आय होने के बाद अब मैंने मजदूरी पर जाना भी बंद कर दिया है। अब मैं स्वयं का रोजगार करने लगी हूँ।

इस काम में मेरे पति भी मेरी मदद करने लगे हैं,और मुर्गीपालन मेरे परिवार का स्थायी रोजगार बन गया है। अब मेरे परिवार/घर और बच्चों की पढ़ाई का खर्च कुछ हद तक चलने लगा है। मेरे इस रोजगार को देखकर गांव के 2 और परिवारों ने भी संस्था की मदद मुर्गीपालन का रोजगार शुरू किया है। अभी वे 10*10 का शेड बनाकर 40 चूजे पाल रहे हैं। मैं इन दोनों परिवारों की मदद करती हूं।

अब तो अलग-अलग एरिया से भी महिलायें/परिवार मेरे मुर्गीपालन का काम देखने आते हैं। अब मैं उन महिलाओ को मेरे जीवन का उतार-चढ़ाव और मुर्गीपालन के रखरखाव, उसकी मार्केटिंग के बारे में ट्रेनिंग देती हूँ। अब मैं और मेरा परिवार मुर्गीपालन के काम से खुश है। मेरा सपना है कि मैं इस रोजगार को 1000 चूजों तक लेकर जाऊंगी। मुझे उम्मीद है कि मेरे काम को देखकर गांव तथा व अन्य एरिया की महिलायें/परिवार भी मेरी तरह मुर्गीपालन को अपना नियमित आय का साधन बनायेंगी। मेरा सपना है कि मेरे बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई करें और अच्छा जीवन-यापन करें।

■ **इब्तिदा संस्था,** अलवर

श्यामगढ़ गांव की आत्मनिर्भर महिलाओं की सफलता की कहानी

दीक्षा महावर

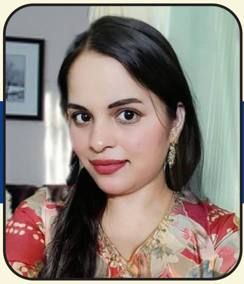

हम सभी महिलाएं राजस्थान के ब्यावर जिले के श्यामगढ़ गांव की रहने वाली हैं। हमारा गांव पहाड़ी के दूसरी तरफ होने के कारण विकास के मामले में काफी पिछड़ा हुआ है। इस गांव में ज्यादातर परिवार निम्न वर्ग की श्रेणी में आते हैं।

दिशा समाजसेवी संस्था द्वारा चलाये जा रहे संगठित बकरी पालन समूह में जुड़ने से हमारे गांव में आर्थिक विकास देखने को मिल रहा है। बकरी पालन समूह में 38 महिलाएँ सदस्य हैं। हमारे बकरी पालन समूह में रेखा जी पशु सखी के रूप में महत्वपूर्ण काम कर रही हैं।

रेखा जी ने संस्था की मदद से पशु प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण लिया है। इस वजह से वह बकरियों में होने वाली छोटी-मोटी बीमारियों का प्राथमिक उपचार समय पर और कम पैसों में करती हैं। साथ ही बेहतर बकरी पालन के लिए समुदाय के सदस्यों को जागरूक भी करती हैं। हमारे गांव की महिलाएं बकरी पालन के अलावा मेहंदी पैक करने वाला कोन भी बनाने का काम करती है।

पहले की हालत

पहले हमारे पास कोई भी रोजगार नही था। हम महीने का एक रुपया भी नही कमाते थे। सुसंगठित तरीके से बकरी पालन की जानकारी भी नहीं थी। हमें यह भी नहीं पता था कि बकरियों की अच्छी नस्ल क्या होती है। और हम सिर्फ देशी नस्ल की बकरियों को बिलकुल पारम्परिक तरीके से पाल रहे थे। हमें टीकाकरण, डीवार्मिंग, बकरियों के मुंह और खुर का पक जाना आदि के बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी। हमें बकरियों का सही वजन और बकरियों के उचित ग्रोथ के बारे में भी कुछ नहीं पता था। बाजार भाव की जानकारी के अभाव के चलते हम किसी भी समय पर बकरियों को बेच देते थे। इससे हमें हमारी मेहनत का उचित मेहनताना नहीं मिल पाता था।

बाद की स्थिति

जब हम "दिशा संस्था" से जुड़े, तब हमारे गांव की महिलाओं को व्यवस्थित तरीके से बकरी पालन की जानकारी मिली। महिलाओं को Livelihood Enterprise Development Programmes (LEDP) की ट्रेनिंग करवायी गयी, जिससे हमें बकरियों में मौसम के अनुसार फैलने वाली बीमारियों के बचाव और उपचार हेतु डीवार्मिंग व टीकाकरण करवाने और उनके सही पालन-पोषण के बारे में जानकारी मिली। साथ ही हमें अच्छी नस्ल की बकरियों जैसे- सिरोही, जमना परी, मारवाड़ी और तोता परी जैसी प्रमुख नस्लों के बारे में पता चला।

हमारे बकरी पालन समूह में चयनित महिलाओं को संस्था की तरफ से मॉडल हाउस, छह बकरी यूनिट और एक मेमना नर्सरी निर्माण करवाया गया है। मॉडल हाउस (आदर्श इकाई) में कुछ जरूरी सामान जैसे (चरनी, पानी टब, कुट्टी छानने और काटने की मशीन तथा चद्दर पाईप) उपलब्ध करवाया गया है। रेखा जी के अनुसार, एक महिला के पास शुरुआत में केवल 2 बकरियां थी, संस्था की माध्यम से 2 बकरी और देने के बाद उसने मात्र एक साल में बकरियों को बेचकर 50000 रुपये कमाये जो कि महीने का लगभग 4000 रुपया होता है।

रेखा जी खुद महीने में 4000 से 5000 रुपये तक कमाती हैं। उन्होंने अपनी एक छोटी सी दुकान भी खोल ली है। ऐसी और भी महिलाएं हैं जिन्हें लगभग 10 से 20 बकरियां पालने का लाभ हुआ हुआ है। अब इस गांव की महिलाओ को घर पर ही अच्छा रोजगार मिल रहा है जिससे इनके जीवन का आर्थिक पक्ष मजबूत होता दिखाई दे रहा है, साथ ही ये आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं।

■ **दिशा संस्था,** अजमेर

मियासा गांव में हलमा से निकला आदिवासी समुदाय की समस्याओं का हल!

नागेन्द्र सिंह खंगारोत

राजस्थान की अरावली पठार के बाँसवाड़ा जिले की तहसील घाटोल में बसा है पहाड़ी क्षेत्र वाला गांव मियासा। यहां रहने वाली जनजाति यहां की जैव-विविधता पर पूरी तरह निर्भर है। इसलिए यह जनजाति अपनी पुरातन परंपराओं और कुदरती ज़ान को अपने अंदर समेटे हुए है। इसके चलते जंगल भी बचे हुए हैं और जनजाति समुदाय भी अपना अस्तित्व बचाए हुए हैं।

यह पूरा इलाका पलायन और सूखे के लिए जाना जाता है। यहां रहने वाले भील समुदाय के आदिवासियों के लिए कई समस्याएं जैसे पानी की कमी और कम कृषि उपज बड़ा संकट हैं। पीने के पानी की समस्या तो इनमें सबसे ज्यादा विकराल है। फसलों को पानी देने का संकट भी अलग से है। इसके चलते वे साल में सिर्फ एक ही फसल से उत्पादन ले पाते हैं। इसी वजह से पलायन, मजदूरी, भुखमरी और शोषण का कुचक्र शुरू होता है।

इस समस्या का समाधान भी इन्हीं आदिवासियों की परंपरागत जीवनशैली और पारंपरिक ज्ञान में निहित है। इसे अब यह समुदाय पुनर्जीवित कर अभ्यास में ले आया है। इस काम में आदिवासियों की मददगार बना है वाग्धारा संस्थान। इसने ग्राम विकास के लिए और जनजातीय समुदाय में वर्षो से चली आ रही परंपरा जो लुप्त होने की कगार पर है, को जीवित रखने के लिए हलमा का महत्व समझाया। इसके बाद मियासा गांव के लोगो ने हलमा की परंपरा को फिर से शुरू कर दिया है।

सामुदायिक भागीदारी वाले 'हलमा' की मदद से यहां कई जगह मेड़बंदी, फसल बुवाई, फसल कटाई और सामुदायिक भूमि पर अरंडी, खाकरा, टिमरू के बीज लगाकर पर्यावरण बचाने का काम भी किया जा रहा है। लेकिन इन दिनों मियासा गांव के यह आदिवासी हलमा द्वारा एक-दूसरे के खेतों में बुवाई, मेड़बंदी करके लाखों रुपये की बचत की वजह से चर्चा में हैं। यानी अनेक समस्याओं से जूझ रहे भील आदिवासियों के इस गांव ने कृषि और अन्य समस्याओं का समाधान अपनी ही परंपरा में खोज लिया है ।

हलमा भील समाज में मदद की एक परंपरा है। जब कोई व्यक्ति या परिवार खुद पर आए संकट से उबर नहीं पाता है, तब उसकी मदद के लिए सभी ग्रामीण जुटते हैं। उसकी मुश्किलों को कम करने के लिए सामूहिक प्रयास किया जाता है। इनकी सोच है कि सामूहिक प्रयासों से बड़ी से बड़ी समस्या का हल भी निकल सकता है। साथ ही यह भी कि किसी भी व्यक्ति को संकट में अकेले छोड़ देना मानवता के खिलाफ है।

भील समाज की हलमा एक प्राचीन परंपरा है। जब कोई व्यक्ति गांव में संकट में फँस जाता है और अपनी पूरी ताकत लगाने के बाद भी उस संकट से नहीं निकल पाता, तब वह हलमा का आह्वान करता है। गांव के लोग हलमा के जरिए सामाजिक दायित्व निभाकर उस व्यक्ति को संकट से निकालते हैं। हलमा की सबसे बड़ी खासियत है इसकी निस्वार्थ भावना और उदारता। इसमें संकट में फंसे व्यक्ति की सहायता तो की जाती है पर दोनों में से कोई पक्ष न तो

अहसान जताता है, न ही मानता है। आपसी सहयोग और सहारे की यह आदिवासी परंपरा इसका उदाहरण है। गांव में खेतों पर काम करने के लिए मजदूर नहीं मिलते। इस संकट से निपटने के लिए हलमा बुलाया जाता है।

हलमा परंपरा अब विलुप्त होती जा रही है। ग्रामीण क्षेत्र में कोई भी एक दूसरे का सहयोग करने को तैयार नहीं होते हैं। लेकिन यहां वाग्धारा के प्रयासों से मियासा गांव में इसी हलमा से सामुदायिक भागीदारी के तहत बिना एक भी पैसा खर्च किए तकरीबन 15 किसानों ने अपने खेतों में सामुदायिक तरीके से बुवाई की।

इस दौरान एक किसान के खेत में 25 लोग सहभागी बने। इस हिसाब से अलग अलग किसानों के खेतो में जा कर लगभग 300 किसानों ने एक-दूसरे के खेतों में श्रमदान किया। हलमा द्वारा पैसा और समय भी बचाया गया है। मियासा गांव के युवा, केशव निनामा मजदूरी के लिए गुजरात जाते थे। केशव और उनके पिता के पास बिना सिंचाई वाली तीन बीघा जमीन है जिससे वे केवल बारिश में बोई जाने वाली मक्का और तुवर ही उगा पाते थे। मक्का सिर्फ घर में खाने में काम आता है। उसे वे मंडी में नहीं बेच पाते थे और फसल से मुनाफा भी नहीं हो पाता था। इसके चलते घर में नकदी की हमेशा तंगी रहती थी।

सामुदायिक भागीदारी से अपनी यही वजह थी कि आधे परिवार को मजदूरी के लिए दूसरे प्रदेशों में जाना पड़ता था।

इसके चलते खेती करने के लिए मजदूर नहीं मिलते थे और खेती में खर्चा भी बहुत होता था। पर अब खेती में फसल बुवाई और कटाई हलमा द्वारा करने से केशव का पलायन बंद हो गया है। इस प्रकार मियासा गांव में एक दूसरे की मदद करके अपनी की जरूरत का हल निकाल लिया है और हलमा के जरिये विकास की राह बना रहे हैं।

■ **वाग्धारा,** बांसवाड़ा

गोपालपुरा गांव के चारागाह के विकास की गाथा व संघर्ष की दास्तान

हेमराज डिडवानिया

कभी-कभी कुछ कहानियां छोटी होती हैं, लेकिन वो कम शब्दों में भी अपनी पूरी दास्तां बयाँ कर देती हैं। ऐसी ही एक छोटी कहानी राजस्थान के जयपुर जिले के पास खारे पानी की सांभरलेक के किनारे बसे गांव गोपालपुरा की है। इस गांव का गौचर बंजर हो चुका है और शैष गौचर निजी स्वार्थों के कारण अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुका है।

गांव के ही छोटे पशुपालक जस्सुराम बावरिया ने बताया कि पहले हमारे गांव में हर परिवार के पास 5 से 10 गायें होती थीं। ये भी हमारे गौचर मे ही चरती थीं। लैकिन धीरे-धीरे हमारी शामलात भूमि-गौचर पर अतिक्रमण के बाद कुछ ही लोगो के पास पशुधन बचा था। जस्सुराम के पास 5 भेड़ व 20 बकरियाँ हैं। वहीं खेती के लिए केवल 1 बीघा बंजर जमीन बची है। अब अपने घर परिवार में कमाई करने वाला वही अकेला व्यक्ति है। वह मजदूरी भी नहीं करने जा सकता। उसका मानना है कि उजड़ चुके गौचर के अभाव में बड़े दुधारू पशु नही रख सकता। क्योंकि उन पशुओं के लिए चराई की जगह गौचर अब वीरान हो चुकी है। वह कहता है, मै अकेला कुछ भी नही कर सकता। अब तो सबको साथ मिलकर चलने की जरूरत है।

ऐसे हालात में एक समय आया जब गोपालपुरा गांव में एक सामाजिक संस्था ग्राम विकास नवयुवक मण्डल लापोड़िया आई। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर इस वीरान पड़े चारागाह का पुनः विकास करेंगे। इसी प्रक्रिया में गांव के प्रमुख लोगो से सम्पर्क किया गया। जब जस्सुराम को इस बात का पता चला तो उसको उम्मीद की एक नई किरण नजर आई। जस्सुराम ने बढ़-चढ़कर लोगों को गांव की चौपाल पर इकट्ठा करने में मदद की। इस दौरान गांव के कुछ अतिक्रमणकारियों ने इसका विरोध किया, लेकिन गांव के ही अधिकांश लोगों ने अपने चारागाह को फिर से जीवित करने के लिए सहमति दी। संस्था के कार्यकर्ता ने बताया कि लंबे समय के अनुभव के मुताबिक चारागाह विकास व जल संरक्षण के लिए चौका तकनीक से आपके चारागाह को ठीक किया जा सकता है। गौचर में चौका तकनीक से नमी बढ़ेगी, पानी का स्तर ऊपर आयेगा। मिट्टी का कटाव रुकेगा और पूरे साल भर पशुओं को चरने के लिए पर्याप्त चारा मिलेगा।

गोपालपुरा गांव के लोगों ने चौका प्रणाली का नाम ही पहली बार सुना था। उनको यह अजीब सा लगा। लोगों में भरोसा बनाने के लिए संस्था ने तय किया कि गांव के 10-12 लोगों का एक्सपोजर विजिट कराया जायेगा। इसके लिए उन्हें राजस्थान के टोंक जिले के मालपुरा ब्लॉक के पास बालापुरा गांव ले जाया जायेगा। इस पर लोगों ने एक्सपोजर विजिट के लिए सहमति दे दी और 10-12 लोगों के नाम भी तय कर दिये।

12 मार्च 2022 को इन सभी को बालापुरा चारागाह का विजिट करवाया गया और चारागाह विकास के लिए

अपनायी गयी चौका तकनीक को दिखाया गया। साथ ही गांव की चारागाह विकास समिति से चर्चा भी करवायी गयी। इसके बाद लोगों को यकीन हो गया कि हमारे गोचर का भी इस चौका तकनीक से विकास सम्भव है।

बालापुरा गांव की विजिट के बाद जस्सुराम ने घर-घर जाकर लोगों को फिर से चौपाल पर लोगों को इकट्ठा किया। उन्हें अपने विजिट के अनुभवों के बारे में बताया। इसके बाद लोगों के सहयोग से गोपालपुरा में पंचायती राज अधिनियम 1996, धारा 170-1 के तहत 15 सदस्यों की चारागाह विकास समिति का गठन किया गया। समिति में 5 महिला सदस्यों को भी शामिल किया और उस समिति का ग्राम पंचायत गोपालपुरा से अनुमोदन करवाया गया।

अब संस्थान के कार्यकर्ताओं और समिति सदस्यों ने साथ मिलकर गांव के चारागाह का CLM (Common Land Mapping) टूल्स एप्स के जरिये किया। इसमें गांव का कुल चारागाह 328 एकड़ निकला। इसमें से 63 एकड़ चारागाह की जमीन अतिक्रमण मुक्त थी। संस्थान और चारागाह विकास समिति ने मिलकर 50 एकड़ चारागाह भूमि में चौका बनाने का निर्णय एवं प्रस्ताव कर बजट का प्रावधान किया। 28 मई 2022 को चारागाह में चौका बनकर तैयार हो गया। जून 2022 में समिति के लोगों ने अपने ट्रैक्टरों से घास के बीज की बुवाई कर दी। जैसे ही जुलाई में बरसात का दौर आया तो कुछ ही समय बाद वीरान पड़ा चारागाह हरा-भरा दिखने लगा। गांव के पशु दिनभर उस चारागाह मे चराई करने लगे।

संस्थान ने इसके बाद एक बार फिर से चारागाह विकास समिति की बैठक बुलायी। इसमें समिति और गांव वालों ने संस्थान का स्वागत किया। इस बैठक में संस्थान ने बताया कि हमारे पास सीमित बजट होता है। अब आप और हम मिलकर अपनी स्थानीय ग्राम पंचायत से मनरेगा योजना के तहत शेष बचे चारागाह विकास के काम को करवा सकते हैं। सभी समिति सदस्यों ने प्रस्ताव पास कर शेष चारागाह का काम ग्राम पंचायत से कराने का निर्णय लिया।

अब "जस्सुराम बहुत ही ख़ुश था। उसके उजाड़ हो चुके चारागाह को दुबारा विकसित किया गया। इस नेक कार्य में उसने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उसकी छोटी सी पहल ने चारागाह को पुनः जीवित कर दिया। अब जस्सुराम को मजदूरी के लिए इधर-उधर भटकना नही पड़ेगा। वह पशुपालन से ही अपने परिवार का भरण-पोषण कर लेगा। अब जस्सुराम तथा अन्य लोग गोपालपुरा में स्वाभिमान से जियेंगे"

■ **ग्राम विकास नवयुवक मण्डल**
लापोड़िया, टोंक

उन्नत खेती ने किया मूली देवी को कर्जमुक्त

नरेन्द्र सिंह चौधरी

भडाज राजस्थान के अलवर जिले के थानागाजी ब्लॉक में एक छोटा सा गांव है। यह ग्राम पंचायत भी है, जो जयपुर संभाग में आता है। यह जिला मुख्यालय अलवर से पश्चिम की ओर 58 किलोमीटर की दूरी पर है। ब्लॉक से इसकी दूरी 12 किलोमीटर है। इस गांव की कुल जनसंख्या 1678 है, इसमें महिला जनसंख्या 49.6% है। गांव की साक्षरता दर 42.7% है और महिला साक्षरता दर महज 13.3% है।

यहां का मुख्य पेशा कृषि और पशुपालन है। छोटे, सीमांत और भूमिहीन परिवार भी मनरेगा में काम करने जाते हैं। कुछ परिवार मजदूरी के काम के लिए पास के गाँवों और जयपुर में रहते हैं। किसानों के पास औसतन 1.5 एकड़ जमीन है। गांव में सिंचाई के लिए पानी की बहुत कमी है। यहां के अधिकांश किसान खरीफ सीजन में बाजरा और रबी सीजन में गेहूं जैसी पारंपरिक फसलें बाते हैं। जबकि कुछ किसान पारंपरिक तरीकों से सब्जी की खेती करते हैं।

इसी गांव की 45 वर्षीय मूली देवी आठ साल पहले इब्तिदा संस्था के आकाश समूह से जुड़ी हैं। उसके पास 0.62 हेक्टेयर जमीन, 1 भैंस, दो बछड़े और 4 बकरियां हैं। उनकी आय का प्राथमिक स्रोत खेती है। हालांकि वे पशुपालन में भी लगी हुई हैं। कभी-कभी मनरेगा के काम के लिए जाती थीं। सभी स्रोतों से कुल आय साल भर में रु 75000/- थी। पति और पत्नी दोनों 0.5 बीघा (1250 वर्ग मीटर) में पारंपरिक फसलों और सब्जी की खेती में लगे हुए हैं। मूली देवी नवंबर, 2020 में एबीएफ समर्थन के साथ इब्तिदा के महिला नेतृत्व वाले आजीविका कार्यक्रम में शामिल हुईं।

सबसे पहले उन्होंने आजीविका सखी द्वारा संचालित आजीविका पाठशाला में कार्यकर्ता नरेन्द्र से खेती और पशुपालन प्रशिक्षण की उन्नत तकनीकों का प्रशिक्षण लिया। उन्नत तकनीकों को अपनाने से बाजरा और गेहूं की फसलों के उत्पादन में 30 से 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं भैंसों का दूध उत्पादन भी 1.5 लीटर प्रतिदिन बढ़ गया। उसी गांव में एक अन्य किसान सुप्यार देवी है। ये दोनों पति पत्नी शारीरिक रूप से असहाय हैं। उनके पास सिंचाई के लिए बोरवेल है, लेकिन वे खेती करने में अक्षम हैं। पाठशाला में मूली देवी से सुप्यार देवी की मुलाकात हुई। वहां मूली देवी ने बताया कि मैं उन्नत तरीके से खेती करना चाहती हूं, लेकिन मेरी जमीन में पानी का साधन नहीं है। इस पर सुप्यार ने अपनी जमीन बटाई पर देने की बात कही और मूली देवी ने सुप्यार देवी की जमीन बटाई पर ले ली। इसके बाद मूली देवी ने पाठशाला में कृषि के उन्नत तरीकों को और अच्छी तरह सीखने की जिज्ञासा जताई।

फिर पाठशाला के अन्य किसानों के साथ परियोजना टीम द्वारा आयोजित किसान प्रक्षेत्र दिवस में भाग लिया। वहां से ट्रेनिंग के बाद 0.5 बीघा (0.125 हेक्टेयर) भूमि पर हाईटेक तरीके से मिर्च की फसल उगाई। मूली देवी को मिर्च की खेती का कोई अनुभव नहीं था। इसमें कृषि इनपुट सहित खेती की लागत 42000 रुपये थी, जबकि उत्पादन 85000 रुपये का था। वह कम फसल उत्पादन और कीटों और बीमारियों के बढ़ते प्रकोप से खुश नहीं थी। वर्ष 2022 की गर्मियों के दौरान उनके गांव में मिर्च प्रदर्शन क्षेत्र विकसित किया गया, जिसमें हाई-टेक कृषि पद्धतियों के हिस्से के रूप में आईएनएम, आईपीएम, मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग किया गया। उन्होंने मिर्च प्रदर्शन क्षेत्र पर आयोजित किसान प्रक्षेत्र दिवस में फिर से भाग लिया। प्रदर्शन क्षेत्र को देखने और हाई-टेक कृषि पद्धतियों के अनुभव प्राप्त करने के बाद वह बहुत प्रेरित हुईं।

उन्होंने तय किया कि प्रदर्शन स्थल पर देखी गई सभी कृषि इनपुट और तकनीक का उपयोग करके मिर्च की फसल उगाएंगीं। उन्होंने पौधे उगाने के लिए हाई-टेक नर्सरी तैयार की और मार्च, 2023 में हाई-टेक कृषि पद्धतियों का उपयोग कर 0.25 हेक्टेयर भूमि में मेड़ क्यारियों पर मिर्च रोप दिया। मिर्च के प्लॉट में अंतरफसल के रूप में गेंदा के पौधे रोपे। कृषि इनपुट, पौध संरक्षण, आईपीएम, मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई प्रणाली सहित खेती की कुल लागत 56,000 रुपये आई। लागत को पूरा करने के लिए समूह से 30,000 रुपये का ऋण भी लिया।

उन्नत पद्धतियों को अपनाने से फसल बहुत अच्छी हुई। रोग और कीड़े कम लगे और पानी की भी बचत हुई। मूली देवी का कहना है कि वह स्थानीय बाजार और कभी-कभी जयपुर के बाजार में भी हरी मिर्च और गेंदा फूल बेच रही हैं। उन्हें उम्मीद है कि बची हुई फसल से वे 40,000 रुपये की हरी मिर्च की बिक्री कर लेंगी। मूली देवी कहती हैं कि इससे पहले मैंने कभी भी एक सीजन में 0.25 हेक्टेयर जमीन से 4.45 लाख रुपये नहीं कमाए। अब तो मिर्च की उत्पादन लागत भी कम हो गई है। उनके गांव और आस-पास के गांव के अन्य किसान तकनीक प्रदर्शन देखने आए। खेत मालिक को 2 लाख रुपये (बटाई पर खेती) देने के बाद भी, मैंने 2 लाख रुपये कमाए हैं। इस तरह, कृषि और पशुपालन जैसे सभी स्रोतों से मेरे परिवार की वार्षिक आय एक साल में 4.25 लाख तक बढ़ गई। इतना अधिक उत्पादन देखकर, उनके गांव के 15 अन्य किसानों ने हाई-टेक कृषि, एनएम और आईपीएम प्रथाओं का उपयोग कर सब्जी की खेती शुरू कर दी है।

मूली देवी ने वर्ष 2021 में अपनी 2 बेटियों की शादी की थी और उनके पति 5 महीने से बीमार थे। उन्होंने अपने पति के इलाज और बेटियों की शादी के लिए साहूकार से 2 लाख रुपये उधार लिए थे। उन्होंने मिर्च की खेती से सारा कर्ज चुका दिया है और अब वे बहुत खुश हैं। मूलीदेवी के द्वारा अपनाई गयी सभी उन्नत तकनीक और उनकी उपलब्धियों को देखते हुए आज पूरा गांव इन तकनीक को अपना रहा है। पूरे गांव को खेती में हाईटेक बनाने में मूलीदेवी के प्रयासों की अहम् भूमिका रही उनकी भविष्य की योजना यह है कि अब मैं जो भी कृषि पद्धतियां अपनाऊंगी, उनमें सभी प्रकार की उन्नत तकनीकों का उपयोग करूंगी और अपने गांव में अधिक से अधिक किसानों को उन्नत तकनीकें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करूंगी।

मूली देवी ने सूक्ष्म सिंचाई पद्धति (ड्रिप व लेजर स्प्रिंकलर), रिजबेड, मलचिंग के साथ सब्जी उत्पादन एवं समेकित कीट प्रबंधन के लिए येल्लो स्टिकी कार्ड व फिरोमोन ट्रेप का उपयोग किया जिससे खर्चा बहुत ही कम हुआ। मूली देवी की सफलता और इन तकनीक से प्रेरित होकर उस गांव में 192 किसानों ने भी ये तकनीक अपना ली है।

> *"मैं इब्तिदा और एक्सिस बैंक फाउंडेशन की आभारी हूँ, जिनकी मदद से मुझे खेती और पशुपालन की उन्नत तकनीकें सीखने को मिलीं। अब मैं कर्ज से मुक्त हूँ।" मूली देवी।*

■ **इब्तिदा संस्थान,** अलवर

अंधेरे में आशा की एक किरण

हीरल रावत

मेरा नाम भंवरी देवी है, और मैं राजस्थान के ब्यावर जिले के सारणीयां गांव की निवासी हूँ। मेरी उम्र 25 साल है। मैंने मैट्रिक तक पढ़ाई की है। आज, मैं अपने परिवार के साथ एक सुखी और संपन्न जीवन जी रही हूँ। लेकिन मेरा यह सफर इतना आसान नहीं था।

तीन साल पहले की बात है, जब मैं जीवन के संघर्षों में उलझी हुई थी। मेरे पास कोई स्थायी रोजगार नहीं था, जिससे मैं अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकूं। बच्चों की पढ़ाई भी ठीक से नहीं हो पा रही थी। हमारे पास कुछ बकरियाँ थीं, लेकिन उनके सही प्रबंधन, नस्ल की जानकारी, टीकाकरण, और प्राथमिक उपचार के बारे में मुझे कुछ नहीं पता था। मैं बस यह सोचती रहती थी कि कैसे अपने परिवार की स्थिति को सुधार सकूं।

इसी बीच, मेरी मुलाकात दिशा समाज सेवी संस्था से हुई। मैं संस्था से जुड़ी और उन्होंने मुझे पशु सखी बनने का अवसर दिया। इसी दौरान मैंने पशु प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें मैंने बकरियों की देखभाल, बीमारियों की पहचान, संतुलित आहार, और नीम तेल बनाने जैसी महत्वपूर्ण चीजें सीखीं।

प्रशिक्षण के बाद, मैंने नीम तेल बनाने का काम शुरू किया। पहले मैंने 1 लीटर तेल बनाया, जिसकी लागत ₹470 आई। मैंने 100ml के डिब्बे में पैक कर ₹100 प्रति डिब्बा बेचा। इस तरह 1 लीटर नीम तेल से मुझे ₹530 का लाभ हुआ। धीरे-धीरे, मेरी मेहनत रंग लाई और अब मैं हर महीने 3 से 4 लीटर नीम तेल बना लेती हूँ। इससे मेरी मासिक आय लगभग ₹2500 हो जाती है। पशु सखी के रूप में भी मुझे ₹500 प्रति महीने की अतिरिक्त आमदनी होती है।

आज, मेरी मेहनत और दिशा समाज सेवी संस्था के सहयोग ने मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया है। मैंने अपनी 10वीं की पढ़ाई भी पूरी कर ली है और अब 12वीं की पढ़ाई भी कर रही हूँ। मेरे बच्चों का नामांकन अब एक अच्छे प्राइवेट स्कूल में हो गया है। हमारा जीवन अब पहले से कहीं अधिक सुखी और संपन्न है।

मैं अपनी इस सफलता के लिए दिशा समाज सेवी संस्था के सभी सदस्यों का तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ। उनके सहयोग के बिना यह सब संभव नहीं हो पाता। अब मुझे गर्व है कि मैं अपने परिवार का सहारा बन सकी हूँ और एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना पाई हूँ।

■ आर.सी.डी. सोशल सर्विस सोसाइटी,
अजमेर

प्रयास, शुरुआत और सफलता की तस्वीर

अंजनी कुमार भराड़िया

ओंकारपुरा बूंदी जिला कार्यालय से तकरीबन 15 किलोमीटर दूरी पर बसा हुआ एक छोटा सा गांव है। इसकी आबादी करीब 1500 से 2000 के बीच होगी। शहर के करीब होने के कारण, शहरीकरण से जुड़ाव आसान बात है। यह गांव कृषिप्रधान है। यहां रबी और खरीफ दोनों की फसल होती है, इन दिनों लोग गरमी की फसल भी करने लगे हैं। जाहिर है कि गांव में आय का मुख्य साधन खेती है और शिक्षा की स्थिति ठीक होने के कारण आय का दूसरा साधन अब नौकरी भी है।

इसी गांव में रहती हैं **तस्वीर गुर्जर**। तस्वीर जी आम भारतीय गृहणियों की तरह दिन भर घर के काम में व्यस्त रहने वाली महिला थीं। वे खेती में अपने परिवार का सहयोग भी करती हैं। इनका जैविक खेती और बीज संरक्षण के कार्यक्रम से जुड़ाव लगभग 6 वर्ष पूर्व हुआ। कहते हैं "मछली के बच्चों को तेरना नहीं सीखना पड़ता है।" कुछ ऐसा ही हुआ तस्वीर के साथ भी। कारण हैं इनके पति रामराज। रामराज जी प्रेम समृद्धि फाउंडेशन में जैविक खेती के प्रति जागरूकता लाने और पारंपरिक बीजों को बचाने का काम कर रहे थे। साथ ही अपने घर के बाड़े में देसी सब्जियों और बीजों को जैविक तरीके से उगाते थे। धीरे धीरे तस्वीर भी इसमें उनका सहयोग करने लगीं और उनकी रुचि भी इस ओर बढ़ने लगी।

उनकी रुचि को देखते हुए रामराज जी ने उनको संस्था में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग दिलाना शुरू किया। यहां पर उन्हे जैविक खेती के तरीके जैसे दवाई बनाना,समृद्धि या रेवड़ी खाद बनाना, मल्टी लेयर फ़ार्मिंग आदि के बारे में बताया गया। साथ ही किसान अपना बीज कैसे तेयार करे, यह भी सिखाया गया।

आज तस्वीर अपने घर पर मल्टी लेयर फ़ार्मिंग कर कम समय में अनेक प्रकार की सब्जियां उगा रही हैं। साथ ही देसी बीज भी तेयार कर रही हैं, जिन्हें वो अपने सीड बैंक

में संरक्षित कर रही हैं तथा बीज की बिक्री और प्रदर्शनी का कार्य भी करती हैं।

इसके साथ ही वे अपने घर पर एक जैविक उत्पाद केंद्र (Bio Resource Centre) भी संचालित कर रही हैं। अपने गांव की SHG की महिलाओं को भी सिखा रही हैं। साल 2023 में इन्होंने अपने गांव में करीब 43 जगहों पर समृध्दि खाद तैयार करवायी।

आइये, समृध्दि खाद के बारे में जानते हैं। वास्तव में गांव में किसान जानवरों के गोबर को एक जगह एकत्र कर देते हैं ,उसे ही बिस्तर की तरह फैला कर उसमे ट्राईकोड्रामा के घोल और अन्य वस्तुओं जैसे छाछ, गुड़, बेसन आदि को मिलाया जाता है। जिससे वह 40 से 45 दिनों में सड़कर तैयार होता है। यह फसल में खाद का काम करता है।

तस्वीर इन सबके अलावा केमिकल मुक्त अनाज और दलहन को सफाई करके खाने योग्य तैयार करने का काम भी करती हैं। वर्तमान में तस्वीर इन सब कार्यो से सालाना 70 से 80 हजार रुपये की कमाई कर परिवार में अपना आर्थिक योगदान दे रही है।

प्रेरणा :- तस्वीर जी कहती है कि “नए काम सीखने के प्रति रुचि और लगन रखी जाए तो कुछ भी असंभव नहीं है और परिवार का सहयोग भी हो तो कहना ही क्या” और वास्तव में यह सही भी है।

वर्तमान में जहाँ आजकल की पढ़ी-लिखी पीढ़ी खेती और घर के काम में अपनी उदासीनता दिखा रही है, ऐसे में तस्वीर बाई के ये कार्य एक सकारात्मक संदेश है।

■ **प्रेम समृद्धि फाउण्डेशन,** बूंदी

महिला की इच्छा ने बदली अपनी और समुदाय की तस्वीर

मानसिंह

मैं आशा अधिकार सखी से जुड़ी हुई हूं। मेरे समूह का नाम कन्हैया है और सीएलएफ का नाम अभियान। समाज की छोटी सोच और पारिवारिक दबाव के कारण मेरा पढ़ाई करने का सपना अधूरा रह गया। कम उम्र में शादी हो जाने के कारण 8वीं ही पास कर सकी। फिर भी आज ससुराल पक्ष की सभी जिम्मेदारियों को संभालते हुए मैंने 12वीं पास कर ली है। आज मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ, और अपने परिवार की परवरिश करने में खुद सक्षम हूँ।

मैं राजस्थान के अलवर जिले के उमरैण ब्लॉक में कैमाला गांव में अपने 2 बच्चों (बेटी,बेटा) दिव्यांग पति (टैम्पो चालक) और सास-ससुर के साथ रहती हूँ। कम उम्र में शादी हो जाने के कारण मेरी पढ़ाई की इच्छा, समाज के लिए कुछ करने का जज्बा सब छूट गया। ससुराल पक्ष की तरफ से मेरी इच्छाओं को खत्म कर दिया गया और मुझे कोई मान-सम्मान नहीं मिला।

शादी के बाद घरेलू काम में इतनी व्यस्त हो गई कि पढ़ाई और समुदाय के साथ काम करने का सपना अधूरा ही रह गया। जब मैंने पति से अपनी पढ़ाई के बारे में बात की तो शुरूआत में तो पति ने भी मेरा साथ नहीं दिया। फिर समय बीतता गया। बाद में पति और परिवार ने मुझे समझने की कोशिश की। आखिरकार उन्होंने मेरी पढ़ाई आगे जारी रखने के लिए सहमति दी। शादी के एक साल बाद एक बेटी का जन्म हुआ। कुछ दिनों बाद मेरे पेट में पानी भरने लगा। उसे निकलवाने के लिए जयपुर जाना पड़ता था। यह समस्या मुझे 7 वर्षो तक रही। उसके बाद मैंने एक बेटे को जन्म दिया, अब मैं 2 बच्चों की माँ हूँ।

मेरी बचपन से इच्छा थी कि मैं अधिक पढ़ाई करके समाज में खुद को स्थापित करूँ, लेकिन ये नहीं हो पाया। जब मेरी बेटी दसवीं की पढ़ाई कर रही थी तो मैंने भी सोचा- क्यों ना मैं ओपन से दसवी की परीक्षा दूँ। इसके लिए मैंने पति से बात की। उन्होंने दसवीं की परीक्षा के लिए ओपन से फार्म लगा दिया। मजे की बात यह रही कि जब मैंने यह फार्म लगाया, उसी समय बेटी भी दसवीं के पेपरों की तैयारी कर रही थी। हम दोनों मां-बेटी ने एक साथ पढ़ाई शुरू की। घर पर जब हम दोनों पढ़ाई करते तो पति और सास-ससुर यह देखकर हंसते थे। कहते थे कि पढ़ाई करके क्या करोगी। ये कोई पढ़ाई करने की उम्र है। फिर मैंने उनको समझाया कि पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती। हैरान करने वाली बात यह रही कि दसवीं की परीक्षा में मेरे अंक मेरी बेटी से अच्छे रहे। मैंने यह परीक्षा 74 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की।

कुछ समय बाद वर्ष 2018 में इब्तिदा संस्था की ओर से अधिकार कार्यक्रम गांव में चलाये जाने की सूचना मिली। पता चला कि इसमें गांव की ही महिलाओं का एक संगठन तैयार किया जायेगा जो गांव के सामुदायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत मुद्दों पर काम करेगा। साथ ही वह अपने अधिकारों के लिए भी काम करेगा। उसके लिए गांव की कुछ महिलाओं को चुनकर एक ग्राम अधिकार समिति का गठन किया जायेगा। समिति एक सखी को चुनेगी जो गांव में ही रहकर काम करेगी। तो मैंने भी परिवार से बात की और इसमें जुड़ गई।

यह भी तय हुआ कि इस संगठन से जुड़ी महिलायं सभी मुद्दों को मासिक मीटिंग में रखेंगी और अपने मुद्दों को लेकर आगे जायेंगी। जब संस्था द्वारा महिलाओं का संगठन तैयार किया जा रहा था, सभी महिलाओं ने आपसी सहमति से आशा को इस संगठन में ग्राम अधिकार सखी का पद दिया। यह भी कहा कि गांव की सभी समस्याओं के हल के लिए हमारे माध्यम से गांव के अंदर व बाहर अधिकार सखी रखेगी। इसके बाद वह महिलाओं के साथ पंचायत जाने लगी। गांव के विकास के लिए मनरेगा का काम नियमित रूप से चलता रहे, इसके लिए प्रयास करती रही। साथ ही गांव के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही।

वह हर माह संस्था के कार्यालय पर मीटिंग के लिए जाती और गांव के विकास के लिए समस्याओं पर चर्चा करती है। इसके अलावा गांव स्तर पर हर माह ग्राम अधिकार समिति की एक मीटिंग होती है। जिसमें गांव की महिलाएं गांव की सभी समस्याओं पर चर्चा करती हैं। इस बैठक में जो भी मुद्दे आते, उनको गांव स्तर पर, ब्लॉक स्तर पर या फिर जिला स्तर पर रखकर उनका निदान करवाने लगी।

शुरूआत में जब वह बैग लेकर निकलती तो गांव वाले उसकी हँसी उड़ाते, उसका मजाक बनाते। बोलते इसके पास कौन सा पद है, जो यह बैग लगाकर गांव से निकलती है। उसको यह बातें चुभने लगीं तो उसने पति से पूछा पद क्या होता है। उन्होंने बताया कि गांव में ही देख लो, पंच,सरपंच, सचिव, पटवारी आदि सम्मानीय पद हैं। इसके अलावा हर क्षेत्र में अलग-अलग पद हो सकते हैं।

मेरे संघर्ष की कहानियों में कुछ अनुभव आपको इन घटनाओं के माध्यम से बतानी चाहूँगी ...

गाँव में 10 वर्षों बाद चला नरेगा का काम - अधिकार सखी होने के नाते पात्र सदस्यों के जॉब कार्ड रिन्यू करवाये। साथ ही जिला कलेक्टर की जन सुनवाई में पात्र लोगों को ले जाकर ज्ञापन दिलवाया और गाँव में नरेगा का काम दिलवाया और इसको निरन्तर जारी रहें इसके लिए भी समुदाय के साथ प्रयास किए।

राशन डीलर कर रहा था मनमानी - खाद्य सुरक्षा में राशनकार्ड धारक 20 परिवार जो राशन प्राप्त करने के पात्र थे फिर भी उनको डीलर राशन नहीं दे रहा था। मैंने उनकी हॉर्ड कॉपी निकलवाकर उनका पूरा राशन दिलवाया।

पंचायत में नरेगा सहायक द्वारा जॉबकार्ड न बनाकर देना - मेरे द्वारा 5 जॉब कार्ड के लिए पंचायत में पात्र लोगों के लिए फार्म भरवाया लेकिन पंचायत में नरेगा सहायक उनको बनाने में आना-कानी कर रहा तो मेरे द्वारा उन सदस्यों को जिला कलेक्टर की जन सुनवाई में ले गई वहाँ जाकर ज्ञापन दिया तो 3 दिन में जॉब कार्ड बनकर तैयार कर पंचायत द्वारा पात्र लोगों के घर पहुँचा दिये।

समुदाय के पात्र लोगों को शौचालय का लाभ मिला - समुदाय के 38 ऐसे पात्र लोग थे जिनको शौचालय निर्माण के लिए राशि दी जानी थी। लेकिन पंचायत, पंचायत समिति के काफी चक्कर लगाने के बाद भी लाभ नहीं दिया जा रहा था। मेरे नेतृत्व में समदाय की महिलाएं पहले सरपंच से मिलीं। उन्होंने कहा, आप पंचायत समिति चले जाइये वहां सचिव मिलेगा, आपका काम हो जायेगा। उसके बाद पंचायत समिति जाकर सचिव से मिले तो वह काफी दिनों तक तो हमें चक्कर कटवाता रहा उसके बाद हमने 181 पर ऑनलाइन शिकायत की तो उसी समय शौचालय के लिए पात्र लोगों के पैसों के चैक पर हस्ताक्षर कर दिये और सभी के खाते में 12000/- रूपये आये।

इस बीच राज्य सरकार ने ग्राम पंचायत के चुनावों को ऐलान कर दिया। आशा को लगा कि क्यों ना मैं भी पंच का चुनाव लड़ूँ। इससे पहले वह गांव में अपनी पहचान बना चुकी थी विभिन्न मुद्दों को लेकर। आशा ने अपने परिवार की इसके लिए सहमति लेनी चाही तो उन्होनें मना कर दिया। जब आशा ने अपनी इच्छा महिला संगठन की मीटिंग में रखी तो महिलाओं ने सहमति दे दी। कहा कि इससे हमारे गांव की समस्याओं का हल जल्दी हो सकता है। इसके साथ ही गांव की महिलायें उसके परिवार को समझाने के लिए भी राजी हो गयीं। फिर संगठन के प्रयासों से उसका परिवार भी इसके लिए राजी हुआ और पंच पद के लिए फार्म भरवा दिया।

उस वार्ड से 4 फार्म भरे गये। इनमें से आशा ही एक महिला थी, बाकी सभी पुरुष थे। शुरूआत में तो सभी पुरुषों ने उसके पति व उससे बात कि वह अपना फार्म वापस ले। लेकिन उसका हौसला बुलंद था, वह समाज में बदलाव लाना चाहती थी इसलिए उसने मना कर दिया। जिस दिन वोटिंग थी, उस दिन धीरे-धीरे वोट गिरने शुरू हुए तो शुरूआत में उसके पक्ष में कम वोटिंग हो रही थी। पुरुष पंच उम्मीदवार खुश थे। लेकिन जैसे-जैसे शाम होती गई, आशा के पक्ष में वोटिंग होने लगी। सभी पुरुषों को कम वोट मिले, और शाम होने के साथ ही आषा उस वार्ड की पंच बन गई। इसकी चर्चा आसपास के लोगों, विशेषकर महिलाओं में होने लगी कि एक साधारण परिवार से वास्ता रखने वाली महिला पंच बन गई है।

इससे गांव में संगठन की महिलाओं के साथ-साथ हर महिला खुश थी। साथ ही परिवार के लोगों की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। अब लोग उनको बधाई देने आने लगे। आशा के इस जज्बे की गांव के ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्र के लोगों ने भी सराहना की। इस पर राजस्थान पत्रिका में भी एक लेख दिनांक 13 अप्रैल, 2024 को अलवर संस्करण में प्रकाशित हुआ। आशा ने अभी हाल में 12वीं की परीक्षा पास की है और इसको आगे भी जारी रखने का फैसला किया है।

गांव में जो भी सरकारी काम होता है, उसमें उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे किसी काम का प्रस्ताव देना और उनको पास करवाकर गांव के विकास के लिए आना। गांव में उसके साथ युवा, सलाहकार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, जन प्रतिनिधि सब मिलकर काम करते हैं। वह गांव में सुरक्षा सखी का काम भी करने लगी है। गांव की कोई भी समस्या हो, उस पर साझा प्रयास से काम होने लगा है। गांव में कोई भी कार्यक्रम आयोजित होता है तो उसको सबसे पहले बुलाया जाता है और सम्मान दिया जाता है। उसने संविधान के मौलिक अधिकारों के बारे में भी लोगों को जागरूक करने के साथ ही सामाजिक मुद्दों पर भी काम किया है। दहेज, मृत्युभोज जैसी सामाजिक कुरीतियों को भी बातचीत करके रुकवाया है।

अब लोगों को महिलाओं के संगठन और आशा के प्रति विश्वास होने लगा है। गांव के विकास के मुद्दों को लेकर लोग जब भी बात करते हैं तो उसको सबसे पहले बुलाते है। अब आशा एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में समाज में खुद को स्थापित कर चुकी हैं। गांव का प्रतिनिधित्व करने लगी है। पहले गांव के पुरुष महिलाओं के संगठन को नहीं मानते थे। लेकिन अब वे भी उसके कामों को देखकर उसकी प्रशंसा करते हैं। उसके हौसले ने उसके जीवन के साथ गांव की तस्वीर भी बदल दी है। वे कहती हैं कि अगर मुझे आगे समाज के विकास के लिए कुछ और करने का मौका मिलता है तो उसको पूरी ईमानदारी के साथ करने का प्रयास करूंगी।

■ **इब्तिदा संस्था,** अलवर

जल पुनर्भरण के लिए सामुदायिक जागरूकता

मोहन दोगाया

राजस्थान के सीकर ज़िले के लक्ष्मणगढ़ ब्लॉक का गांव भूमा बड़ा भौगोलिक दृष्टि से अलग-थलग क्षेत्र है। यहां किसानों के पास उबड़-खाबड़ जमीन है, जो तेजी से बंजर होती जा रही है। यहां न्यूनतम तापमान -1 से -3 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम 49 डिग्री सेल्सियस तक होता है। भूजल का टीडीएस 1700-2500 पीपीएम और उच्च फ्लोराइड सामग्री 1.5 से 3 पीपीएम के बीच है। सिंचाई और पीने के लिए भूजल कम है और ट्यूबवेल की औसत गहराई 350-400 फीट तक है।

जाहिर है कि यहां स्थिति बहुत गंभीर है। यहां उपलब्ध पानी, जल पुनर्भरण और भंडारण, असमान मौसम और तापमान, पानी में स्वास्थ्य के लिए खतरनाक पदार्थ, फसल पैटर्न आदि के साथ जीवित रहने के बारे में पर्याप्त समझ की गहन जरूरत है।

बजाज ट्रस्ट ने गांव में युवाओं, किसानों, महिलाओं और बच्चों के साथ जागरूकता निर्माण प्रशिक्षण, बैठकें और संवेदीकरण रैलियां आयोजित की हैं। कई समस्याओं का समाधान भी किया गया है, और कुछ समस्याओं पर गंभीर विमर्श कर पाया गया कि पुनर्भरण और वर्षा के बाद उच्च टीडीएस (2400 से 1700 पीपीएम) में कमी, फ्लोराइड की मात्रा में कमी (मिट्टी के बर्तन (मटके) के आसपास नमक), पुनर्भरण के बाद पंपिंग समय में 1 घंटे की वृद्धि, किसान फसल उगाने में सक्षम हैं, जहां पुनर्भरण के बाद बोर सूखे रह जाते थे। लेकिन अब यहां बदलाव दिखने लगा है। सिंचाई के तहत क्षेत्र में वृद्धि हुई है, स्प्रिंकलर में अतिरिक्त नल (4 से 6 नल) लगाना संभव हो पाया है, पानी की गुणवत्ता के स्वाद (लवणता) में सुधार और नमी में वृद्धि हुई है।

पहले

बाद में

जल पुनर्भरण के लिए समुदाय आधारित अभिनव जल पुनर्भरण संरचना रणनीति अपनायी गयी थी। इसके लिए कुल लागत रु. 1,68,500 आयी। इसमें समुदाय द्वारा रु. 67,400 का योगदान दिया गया। वहीं बजाज ट्रस्ट द्वारा शेष राशि की मदद की गयी। समुदाय की ओर से इस संरचना के निर्माण के लिए मदद की गयी है।

पूरी गली से वर्षा का पानी आम चौक में एकत्र होता है जहाँ पानी का पुनर्भरण होता है। गांव- भूमा बड़ा में निर्मित समुदाय आधारित अभिनव जल पुनर्भरण संरचना ने जल पुनर्भरण समस्या का स्थायी समाधान प्रदान किया है।

ग्राम विकास समिति और ग्रामीण बहुत खुश हैं क्योंकि पिछले मानसून में पानी का पुनर्भरण हुआ था। (जलग्रहण क्षेत्र- 4,55,000 वर्गमीटर, जल पुनर्भरण संरचना की गहराई- 69 मीटर, पिछले सीजन में जल पुनर्भरण- 20,47,50)।

■ **बजाज फाउण्डेशन,** सीकर

चौका प्रणाली ने बदल दी लोगों की तकदीर...

रामेश्वर लाल सैनी

गोचर बचेगा तो गाय बचेगी! गाय बचेगी तो गांव बचेगा!!

चौका प्रणाली ने लोगों के चेहरों से गुम हुई हंसी ओर मुस्कुराहट को वापस लौटाया है। जब यह गांव ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगा था, तब चौका ने इसे प्रेम की माला में संजोने जैसा कार्य किया है। इतना ही नहीं, लोगों को प्रकृति से जोड़ने की दिशा भी प्रदान की है। साथ ही, गांव के हर प्राणी को खुशी से जीवन जीने का आधार दिया है। गोचर को हरा-भरा करके पर्यावरण को संरक्षण और वन्य जीवों को सुरक्षा दी है। गांव में शांतिमय वातावरण बनने के साथ सब का विकास हुआ है आईये जानें, यह अद्भुत काम कैसे हुआ।

यह कहानी बालापुरा गांव की है, जो राजस्थान के टोंक जिले के मालपुरा उप खण्ड के मलिकपुर ग्राम पंचायत का राजस्व गांव है। गांव में गुर्जर, गुसाईं और हरिजन समाज के लोग रहते हैं। इसकी कुल आबादी लगभग 2500 है। पशुधन में छोटे-बड़े पशुओं को मिलाकर 1700-1800 की संख्या है। इनका पैतृक काम खेती और पशुपालन है। खेती बरसात पर निर्भर रहती है। बरसात अच्छी होने पर फसल अच्छी हो जाती है, बरसात समय पर पर्याप्त नहीं होने पर फसल नहीं होती है।

वर्ष 2002-03 के अकाल में इनके खेतों में ना तो अनाज हुआ ना ही गोचर में चारा। ऐसे विकट समय में लोगों के पास पलायन करने और अपने पशु बेचने के अलावा ओर कोई रास्ता नहीं बचा था। लोग मवेशियों को बचाने के लिए पलायन करने लगे और एक के बाद एक पलायन पर जाने लगे। गांव के गांव मवेशियों के साथ खाली होने लगे। गाँवों की चहल-पहल खत्म हो गयी, चौपालों पर सन्नाटा छाने लगा। यह गांव भी एक ढाणी में बदलता नजर आने लगा। क्योंकि आधे से अधिक लोग पलायन कर गये थे। वे साल में आठ नौ माह मवेशियों के साथ बाहर ही रहते थे। इसी वजह से परिवार के सदस्यों को रात में नींद व दिन में खुशी नहीं मिल पा रही थी।

सच तो यही है कि गांव छोड़कर जाने वालों का दुख लिखकर बयान नही किया जा सकता। दूसरी जगह हर कोई बेगाना लगता था। चारों ओर देखते तो अंधकार के अलावा कुछ नजर नहीं आता था। ऐसे में नींद क्या, पेट की भूख भी मिट जाती थी। बस कुछ हंसी-खुशी के पलों के साथ बचपन की यादें गांव में ही रह गई। आप क्या जानो गांव छूटने का दर्द। दिनभर मवेशी चराना और रात में चौकीदारी करना। पूरी जिंदगी मानो पशुओं तक ही सिमट कर रह गई थी। जब गांव आते ओर अपने गोचर की ओर देखते तो कुछ भी दिखाई नहीं देता था। गोचर में वनस्पति के नाम पर कुछ भी नहीं बचा था। बरसाती पानी के साथ उपजाऊ मिट्टी बहकर चली गई और गोचर बंजर हो गया था।

वर्ष 2002-03 में सायर देवी गुर्जर का लापोडिया आना हुआ। लापोडिया में इनका पीहर है। इन्होंने अपने भाई रामकरण गुर्जर को साथ लेकर ग्राम विकास नवयुवक मंडल लापोडिया संस्था के सचिव श्रीमान् लक्ष्मण सिंह जी से मुलाकात की। उन्हें अपने गांव की दुख भरी कहानी सुनाई। इसके बाद संस्था के कार्यकर्ताओं ने उनके गांव का भ्रमण किया और गांव के लोगों को लापोडिया गोचर का भी भ्रमण करवाया। उन्हें जल संरक्षण के बारे में समझाया गया कि जल है तो सब कुछ है। अगर जल नहीं तो कुछ नहीं। लोगों को लापोडिया की जल संरक्षण नीति और चौका प्रणाली से गोचर विकास की तकनीक पसंद आई। उन्होंने

इस बारे में आपस में लोगों से चर्चा भी की।

इसके बाद गांव में पन्द्रह सदस्यों की ग्राम विकास समिति बनी। इसमें दस पुरुष और पांच महिलाऐं चुनी गयीं। समिति निर्माण के बाद गोचर विकास प्लान पर काम शुरू हुआ। समिति व संस्था ने पूरे 600 बीघा जमीन का भ्रमण किया। इस दौरान गोचर का ढलान, मवेशी पेयजल के लिए नाडियां निर्माण की जगह का चयन, गोचर में से जाने वाले रास्ते और वनस्पति को ध्यान में रखते हुए पूरे गोचर विकास का प्लान तैयार किया गया।

प्लान के अनुसार टॉप स्तर से गोचर में चौका निर्माण

का काम शुरू हुआ। चौका प्रणाली निर्माण कर गोचर में नौ इंच बरसाती जल को रोकने का काम किया और अधिक पानी को प्लानिंग के अनुसार बनाई गई नाडियो में जुटाया गया। इससे गोचर में नमी बढ़ी ओर वनस्पति पनपने लगी। देखते ही देखते गोचर हरा-भरा हो गया। गोचर में विभिन्न प्रकार की घास व तरह-तरह के पेड़ उग आये। हमें यकीन नहीं हुआ कि बंजर पड़ी गोचर भूमि में यह करिश्मा कैसे हो गया। बस यह करिश्मा पानी का था। सभी लोगों ने मिलकर चौका प्रणाली बनाने में दिल से मेहनत की थी। यह करिश्मा चौका प्रणाली बनने के दो-तीन साल बाद देखने को मिला।

वर्ष 2002-03 से शुरू करके 2004-05 तक 600 बीघा गोचर में चौका प्रणाली का काम पूरा किया गया। में फल के रूप में पातड़ी आती है, जो मवेशियों के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है

इससे मवेशियों के दूध की मात्रा में 20-30 प्रतिशत की वृद्धि होती है। उन्हें बीमारी भी कम होती है। यह सब कमाल गोचर में चौका प्रणाली का ही है। समिति ने अपना काम यहीं तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने गांव में रहने वाले हर प्राणी के बारे में सोचा। हर प्राणी के लिए प्लान किया। गोचर में पक्षियों के रहने के लिए 5-6 बीघा में एक बगीची बनायी गयी। इस बगीची में घास और पेड़ लगाकर चारों ओर से बाड़ बनाकर बंद किया गया। बगीची में लोगों का और मवेशियों का आवागमन बंद किया। ताकि पक्षी अपने आप को सुरक्षित महसूस करें ओर अंडे देने लगें।

इस दौरान मवेशी पेयजल के लिए तीन नाडियो का निर्माण भी हुआ। चौका प्रणाली से मवेशियों का पलायन रुका है। वर्तमान में गांव का एक भी परिवार मवेशियों के साथ पलायन नही करता है, बल्कि गांव में छोटे पशुओं की संख्या बढ़कर दुगनी हो गई है। सभी मवेशियों को गोचर में चरने के लिए अच्छी और उनकी मनपसंद घास मिलती है।

मवेशियों को सालभर में तैंतीस प्रकार की घास खाने को मिलती है, और गर्मियों में देशी बबूल की लूग पाती पर्याप्त मात्रा में मिलती है। यह पातड़ी मवेशियों के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है। देशी बबूल पर गर्मियों के दिनों

समिति ने गोचर प्रबंधन और रखरखाव के नियम भी बनाये। गांव में परिवारों की आय बढ़ाने के लिए गिर नस्ल की गाय और मालपुरी भेड़ रखने के लिए लोगों को प्रेरित किया गया। देव ऊठनी एकादशी पर आजीविका के सभी संसाधनों की पूजा करना व हरियाली को बढ़ाने तथा पर्यावरण को बचाने का संकल्प लेकर पेड़ों को रक्षासूत्र बांधने जैसी पहल भी की गयी। इस गांव का विकास गांव जैसा ही हुआ है, इसलिए यहां पर शान्ति और सहभागिता के साथ सब का विकास हुआ है।

■ **ग्राम विकास नवयुवक मंडल,** लापोडिया

खुशहाली की ओर बढ़ते कदम

मुकेश कुमार

राजस्थान में सिरोही जिले के बहादुरपुरा गांव की एक दृढ़ किसान हैं भूरी देवी। इन्हें शुरू में तो बाजार की दूरी और सब्जी की खेती के बारे में जानकारी की कमी के कारण कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन इनके जीवन में एक परिवर्तनकारी मोड़ तब आया जब उन्होंने मुलिया खेड़ा की यात्रा के दौरान स्वयं सहायता समूहों के बारे में जाना।

सशक्त महिलाओं से प्रेरित होकर, भूरी देवी ने अन्य स्थानीय महिलाओं के साथ मिलकर सेंटर फॉर माइक्रो फाइनेंस संस्था के सहयोग से आशापुरा माता स्वयं सहायता समूह का गठन किया। संस्था द्वारा आयोजित अनादरा गांव के एक भ्रमण कार्यक्रम में सब्जी की खेती, सूक्ष्म सिंचाई, मुर्गी पालन और बकरी पालन में सफल उद्यमों को दिखाया गया। इस अनुभव ने भूरी देवी और उनके समूह को टमाटर और मिर्च की खेती करने के लिए प्रेरित किया।

संस्था के मार्गदर्शन में, भूरी देवी ने जैविक खेती तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें जैविक उर्वरक, पीली चिपकने वाली पट्टियाँ और ग्रोवर ग्रैन्यूल का उपयोग शामिल है। संस्था ने आवश्यक सामग्री प्रदान की, जिससे रोग मुक्त फसलें और बेहतर फल की गुणवत्ता सुनिश्चित हुई। भूरी देवी ने अपने खेत के 3/4 बीघा पर टमाटर और 1/4 बीघा पर मिर्च की खेती की। इससे उन्हें 66,000 रुपये की आय हुई।

इसका सकारात्मक असर मुर्गी पालन पर भी पड़ा। संस्था ने मुर्गीघर बनाने में मदद की, जिससे भूरी देवी मुर्गी पालन का काम बढ़ा सकी। इस पहल से उन्हें 6,000 से 8,000 रुपये की आय होने का अनुमान है। अतिरिक्त आय भूरी देवी के परिवार के लिए परिवर्तनकारी साबित हुई। उनके बड़े बेटे झुम्मा राम ने एक टेम्पो में निवेश किया, जिससे घर की आय बढ़ी और बेटे की बेरोजगारी दूर हुई ,वह बताता हैं कि अब रोजाना 800 से 1000 रुपये कमा लेता है। अब उसको मजदूरी के लिए दर-दर नही भटकना पड़ता। किसी के सामने हाथ नही फेलाना पड़ता ,अब वह शान से मेहनत की कमाई से जीवनयापन कर रहा है ।

सफलता की कहानी यहीं नहीं रुकी। अतिरिक्त आय के साथ भूरी देवी ने अपने पोते को स्कूल भेजने का सपना पूरा किया। जहाँ टेम्पो से समृद्धि आई, वहीं इसने टमाटर और मिर्च को पास के बाजार तक पहुँचाने की चुनौती को भी कम किया। इनसे प्रभावित होकर गांव की 25 महिला किसानों ने सब्जी और 20 महिला किसानों ने मुर्गी पालन को अपनाया और अब वे अच्छी आय प्राप्त कर रही हैं।

भूरी देवी की यात्रा स्वयं सहायता समूहों की परिवर्तनकारी शक्ति और CmF संस्था से मिली बहुमूल्य सहायता का प्रमाण है। टिकाऊ कृषि पद्धतियों के माध्यम से, भूरी देवी ने न केवल चुनौतियों पर विजय प्राप्त की, बल्कि अपने परिवार के लिए नए अवसर भी पैदा किए, जो पूरे समुदाय के लिए आशा और सशक्तिकरण का प्रतीक है।

भूरी देवी के शब्द- सेंसता वालों ने हाऊ काम कीदो मोने हानो उगावा में ओर मुर्गी राखवा में मदद किदी इसु मारा परिवार में खुशी आईं।

■ **सेंटर फार माइक्रो फाइनेंस,** सिरोही

लड़कियों के स्वास्थ्य को लगे पंख

अल्पना शर्मा

यह कहानी किशोरी बालिका के स्वास्थ्य के लिए लड़ी गई जंग पर है। इसमें बालिका के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी यात्रा पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। उनके जीवन में घटित घटनाओं से परियोजना तरंगिणी के पहले और बाद की स्थिति को बताया गया है। इस कहानी में बताया गया है कि किस तरह से उनके जीवन में स्वास्थ्य में परिवर्तन आया।

हरियाणा के रोहतक जिले के बालियाना, भालोट, बोहर और खेड़ीसाध गांव में उन्नयन समिति की परियोजना तरंगिणी के तहत 15 से 19 वर्ष तक की 1000 किशोरियों को पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम में लाभार्थियों के रूप में चुना गया। इस कार्यक्रम के तहत किशोरियों में स्वास्थ्य पोषण संबंधी जागरूकता लाने पर ध्यान दिया गया। इसी के तहत कार्यक्रम के दौरान पता चला कि किशोरियों में बहुत सी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हैं जिसे वह किसी से भी नहीं कह पाती हैं। कुछ दिक्कतें ऐसी हैं जिन पर खुल कर बोलना शर्म और लाज का विषय समझा जाता है। यहां महिलाओ को बाहर आने-जाने की अनुमति नहीं है। वहां माहवारी, UTI जैसी समस्याओं पर बोलना बहुत ही चुनौती भरा होता है।

ऐसी ही चुनोतियों का सामना कर रही थीं हमारी कुछ लाभार्थी। इन्हीं में से एक किशोरी है निशा। अपने पिता राजेन्द्र, माता उषा और तीन भाई-बहनों के साथ एक कमरे के आधा कच्चे-पक्के मकान में रहती है। माता-पिता मजदूरी करते हैं जिनकी मासिक आय ₹7000 प्रति माह है। निशा नियमित स्कूल नहीं जा पाती थी, क्योंकि उसे थकान और तनाव की स्थिति बनी रहती थी। उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था। जब रेखा, कविता और अल्पना निशा से मिले तब वह नवीं कक्षा की छात्रा थी। उसकी आयु 15 वर्ष थी। परियोजना के दौरान हमारी सभी किशोरियों से बहुत अच्छी दोस्ती हो गई थी और सभी अपनी-अपनी समस्याएं हमें बता रही थीं। इसी दौरान निशा से भी अच्छी दोस्ती हो गई थी और निशा भी हमें अपनी समस्याएं बताने लगी।

उसकी समस्याओं को हम समझ रहे थे और उसकी स्थिति के अनुसार समाधान भी कर रहे थे। निशा का हीमोग्लोबिन 9.2 था। अर्थात गंभीर श्रेणी का एनीमिया। उसको इसी वजह से माहवारी के दौरान ज्यादा दर्द से भी जूझना पड़ता था। इस वजह से वह ठीक से साफ-सफाई पर ध्यान नहीं लगा पाती थी।

तभी हम एक दिन जब बालियाना स्कूल गए तो पता चला कि निशा ने इन समस्याओं के चलते स्कूल आना बंद कर दिया है। उसके माता-पिता ने उसकी पढ़ाई बंद करा दी है। हम उसके घर गए। शाम के 6 बज रहे थे। मां चूल्हे पर रोटी बना रही थी। यूं तो हम निशा के घर आते-जाते थे, पर माता-पिता से ये हमारी पहली मुलाकात थी। हम निशा की स्थिति और उसकी पढ़ाई को लेकर बात ही कर रहे थे, तभी उसकी मां ने कहा, ध्यान नहीं है इसका पढ़ाई में। दसवीं भी नहीं कर पाएगी। इससे अच्छा है, घर का काम करें। ससुराल में यही काम आएगा। जितना पढ़ना आना था, आ गया है और सीख लिया है। तभी मैंने धीमी आवाज में पूछा, क्या

सही में ही सिर्फ घर का काम ही काम आएगा। ससुराल में क्या इसका स्वास्थ्य काम नहीं आएगा। आगे विवाह होगा। मां बनेगी तो क्या स्वस्थ हो पाएगी। स्वस्थ बच्चे को जन्म दे पाएगी और अभी आयु क्या है इसकी 15 वर्ष।

बहुत समझाने के बाद, यानी 7 से 8 बार कोशिश करने के बाद ही हम निशा की मां को सही निर्णय पर लेकर आए। हमने निशा और उसके परिवार को भोजन संबंधी बदलाव पर और दैनिक साफ-सफाई, माहवारी के समय कम से कम चार बार पैड बदलना, तिरंगा भोजन, दैनिक जीवन का मूल आधार के बारे में समझाया। यह भी बताया कि परिवार की स्थिति के अनुसार गांव में ही उगने वाली साठी, कोंद्रा, कुलफा आदि की रोटी, हरी मिर्च वाला नींबू, दही, दूध और निशा के लिए नीले रंग की गोली का प्रत्येक सप्ताह सेवन करने की सलाह भी दी। इससे धीरे-धीरे निशा के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा और अब उसे थकान भी नहीं हो रही थी।

यह बदलाव 6 महीने में आया और आज स्थिति यह है कि निशा 17 वर्ष की हो गई है। उसका हीमोग्लोबिन भी 12.1है। अब उसकी सांस नहीं बढ़ती है। थकान नहीं होती है। अन्य किशोरियों ने भी अपने स्वास्थ्य के प्रति जीत हासिल कर ली है। अब महिलाएं और किशोरिया माहवारी जैसे विषयों पर बोलने लगी हैं। आगनवाड़ी कार्यकर्ता केला, पिंकी के अनुसार किशोरियों, गर्भवती और धात्री माताओ के स्वास्थ्य में परिवर्तन आया है। उनके हीमोग्लोबिन स्तर में सुधार हुआ है। ANM ललिता, सुनीता, सुदेश, सुनीता का कहना है कि पहले संक्रमण और माहवारी जैसे मुद्दों पर किशोरी और महिलायें अपनी समस्या खुल कर नहीं रख पाती थीं, शर्मा जाती थीं। लेकिन अब स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आई है। साथ ही दैनिक दिनचर्या में भोजन संबंधी सुधार भी हुआ है। IFA की गोली की मांग भी बढ़ गयी है। अब इन किशोरियों ने आगे ऊंची उड़ान भरने की ठान ली है।

■ **उन्नयन समिति,** रोहतक

कटोरी

दीपक शर्मा

तनु श्री

राजस्थान के एक छोटे से गांव में, जहाँ समय मानो ठहर सा गया था। वहां की महिलाओं के लिए जीवन किसी संघर्ष से कम नहीं था। सदियों से चली आ रही परंपराओं और सामाजिक दबावों ने महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद कर रखा था। उनके सपनों और महत्वाकांक्षाओं को समाज की दकियानूसी सोच ने दबा दिया था। लेकिन इसी गांव की महिलाओं के लिए एक नई सुबह तब आई, जब "अपनी सहेली प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड" (ए.एस.पी.सि.एल) की स्थापना हुई। इस कंपनी का गठन तीन ग्रामीण महिला संघों के सहयोग से किया गया, जिसमें 1800 महिला किसान सदस्य बनीं।

संघर्ष का आरंभ

जब "अपनी सहेली" की नींव रखी गई, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह पहल इतनी बड़ी सफलता की कहानी लिखेगी। शुरुआत में, महिलाओं के लिए अपने परिवार और

समाज की सीमाओं से बाहर निकलकर काम करना बहुत मुश्किल था। उनके कदम-कदम पर समाज के ठेकेदारों ने सवाल खड़े किए। क्या महिलाएं व्यापार कर सकती हैं? क्या वे बाजार की चुनौतियों का सामना कर पाएंगी? ऐसी ही कई चुनौतियाँ सामने थीं। लेकिन इन महिलाओं ने हार मानने से इनकार कर दिया। वे जानती थीं कि अगर उन्हें अपनी स्थिति में सुधार करना है, तो संघर्ष करना ही होगा।

पहली चुनौती: सामाजिक बाधाएं

गांव में कई परिवारों ने इस पहल का विरोध किया। कई महिलाएं चाह कर भी इस अभियान में शामिल नहीं हो पाईं, क्योंकि उनके परिवारों ने उन्हें अनुमति नहीं दी। यहां तक कि कुछ ने अपनी बेटियों और बहुओं को धमकी भी दी कि अगर वे इस काम में शामिल हुईं, तो उन्हें परिवार से बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन जो महिलाएं इस पहल का हिस्सा बनीं, उन्होंने यह ठान लिया था कि वे अपनी स्थिति में सुधार लाकर रहेंगी।

दूसरी चुनौती: व्यापार की समझ

महिलाएं, जो पहले कभी घर की चौखट से बाहर नहीं निकली थीं, उन्हें व्यापार की बारीकियाँ समझनी थीं। बाजार की मांग, उत्पाद की गुणवत्ता, ग्राहक से बातचीत—ये सब नई बातें थीं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण दिया गया, और इसके बावजूद शुरुआती समय में कई बार असफलताएँ हाथ लगीं। उनके उत्पाद बाजार में बिक नहीं पाते थे, और कई बार उन्हें नुकसान उठाना पड़ा।

तीसरी चुनौती: पुरुष प्रधान समाज में जगह बनाना

गांव के पुरुषों ने भी इस प्रयास को हल्के में लिया। उन्हें यकीन नहीं था कि महिलाएं इस तरह का काम कर

पाएंगी। उनके बीच महिला सशक्तिकरण की बात सिर्फ मजाक बनकर रह गई थी। उन्हें विश्वास नहीं था कि महिलाएं इस क्षेत्र में कुछ कर पाएंगी। लेकिन महिलाएं डटी रहीं। उन्होंने अपनी मेहनत से साबित कर दिया कि वे भी व्यापार में सफल हो सकती हैं।

कटोरी का जन्म

"अपनी सहेली" की सफलता के कुछ साल बाद, साल 2017 में "कटोरी" की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य महिलाओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बड़े बाजारों तक पहुँचाना था। कटोरी ने महिलाओं के उत्पाद जैसे मसाले, दालें, घी, शहद और अचार को बड़े ब्रांडों की दुकानों तक पहुँचाया। लेकिन यह सफर भी आसान नहीं था।

चौथी चुनौती: बाजार की प्रतिस्पर्धा

कटोरी ने जब अपने उत्पाद बाजार में उतारे, तो उसे कई बड़े ब्रांडों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी। महिलाओं को अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना पड़ा, और साथ ही उन्हें बाजार में अपनी पहचान बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। इस दौरान कई बार उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।

सफलता की ओर

सभी संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने के बाद, आखिरकार कटोरी ने बाजार में अपनी जगह बना ली। आज, कटोरी के उत्पाद इ- कॉमर्स बड़े ब्रांडों जैसे बिग बास्केट, फ्लिपकार्ट, अमेज़न, और रिलायंस की दुकानों में बेचे जाते हैं। और यह उन महिलाओं की कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है, जिन्होंने सभी बाधाओं के बावजूद अपने सपनों को साकार किया।

परिणाम और प्रेरणा

आज, कटोरी के साथ जुड़ी 189,000 से अधिक महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो चुकी हैं, बल्कि उन्होंने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को भी बेहतर किया है। यह कहानी उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई है, जो अपने दम पर कुछ बड़ा करना चाहती हैं।

कटोरी की यात्रा यह दर्शाती है कि जब महिलाओं को मौका दिया जाए, तो वे क्या कुछ नहीं कर सकतीं। संघर्षों और चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने न केवल अपने जीवन को बदला, बल्कि समाज में एक नई मिसाल कायम की। कातोरी का यह सफर जारी है, और इसके साथ ही जारी है गांव की इन महिलाओं का सशक्तिकरण। यह कहानी उन सभी महिलाओं के लिए एक उदाहरण है कि अगर वे ठान लें, तो कोई भी बाधा उन्हें रोक नहीं सकती।

■ **मंजरी फाउंडेशन,** धौलपुर

चेहरे पर छाई मुस्कान

रामजी लाल बैरवा

राजस्थान के ढूँढाड़ क्षेत्र के एक छोटे किसान हैं, जिनका नाम मोहन लाल कुण्डारा है। वे टोंक जिले की निवाई तहसील में चनानी गांव के निवासी है। उनकी उम्र 55 साल है और मात्र 12वीं पास हैं। इनका कृषि से अच्छा सम्बन्ध है। उनके पास 3 बीघा जमीन है। लेकिन कुएं का पानी सही नहीं होने के कारण उनकी खेती पूरी तरह मानसून पर निर्भर है। यह उनके परिवार के जीवन-यापन के लिए पर्याप्त नहीं है। उनका परिवार काफी बड़ा है। इससमें सात सदस्य हैं - दोनों पति-पत्नी, दो लड़कियाँ, दो लड़के और उनकी माँ मूली देवी।

वह खेती-बाड़ी में मेहनत करके अपने परिवार का भरण-पोषण अच्छे से कर रहे थे। लेकिन धीरे-धीरे कम बारिश के कारण उन्हें खेती से मुनाफा कम मिलने लगा। जिससे उनके जीवन में कई चुनौतियाँ खड़ी हो गईं। परिवार का पालन-पोषण, बच्चों की शिक्षा और बड़ी बेटी किरण की शादी करना। इस समय उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ था। मोहन लाल और उनकी पत्नि नाथी देवी को पैसे उधार लेकर शादी करने की एकमात्र उम्मीद थी। वे पैसे उधार नहीं लेना चाहते थे, लेकिन उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। उनके पास अपनी दैनिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त आय नहीं थी। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और उधार के पैसे लेकर अपनी बड़ी बेटी किरण की शादी कर दी।

परिवार की आर्थिक स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती चली गई। इसी कारण बड़े बेटे पवन कुमार (24 वर्ष) ने 12वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी और मजदूरी करने लगा। मोहन लाल हमेशा स्कूल की फीस भरने में असमर्थ रहते थे। फिर भी उनकी छोटी बेटी अंजलि (19 वर्ष) बी.ए. और छोटा बेटा सुरेंद्र कुमार (16 वर्ष) 12वीं कक्षा में पढ़ाई कर रहा है।

निर्माण सोसायटी चाकसू ढूँढ़ाड़ क्षेत्र में किसानों के हित में काम कर रही है। पिछले दिनों निर्माण सोसायटी के कर्मचारी रामजी लाल बैरवा एवं पूरण मल बैरवा चनानी गांव में गये थे। उस दौरान मोहन लाल से मुलाकात हुई। तब उन्होंने बताया कि मेरी खेती पूर्ण रूप से मानसून पर निर्भर है। इसलिए मुझे अपनी लागत और मेहनत के अनुसार अच्छा लाभ नहीं मिल रहा है। जिसके कारण मुझे दिनचर्या में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। तब रामजी लाल बैरवा ने उनसे कहा कि आप और क्या कर सकते हैं। जिससे आपके परिवार को आय का एक स्रोत और मिल सके। ताकि आप अपनी आय बढ़ा सकें और अच्छा जीवन जी सकें। उनके मन में डेयरी फार्म खोलने का विचार था। लेकिन प्रतिकूल हालात के कारण वे डेयरी फार्म खोलने में असमर्थ थे। इसलिए उन्होंने बकरी पालन की ओर रुख किया। उनको छान्देल खुर्द में बकरी पालन करने वाले किसानों से मिलवाया गया। बकरी पालन में होने वाले लाभ-हानि और समस्याओं से अवगत करवाया। इसके बाद उन्होंने उन किसानों से बकरियाँ खरीदने की सोची। लेकिन उनकी बकरियाँ बहुत महंगी थीं। इसलिए वे वहां से बकरियाँ नहीं खरीद सके।

एक दिन वे कृषि विज्ञान केंद्र वनस्थली, निवाई, टोंक में दो दिवसीय किसान गोष्ठी में गये। वहां वैज्ञानिकों ने उन्नत कृषि के बारे में विस्तार से बताया। वहीं डॉ. गीतम सिंह ने गाय, भैंस व बकरी पालन की तकनीक भी विस्तार से बताई। बकरी पालन में भी यहां की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सिरोही नस्ल की बकरी पालने की सलाह दी गई। फिर उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र वनस्थली से सिरोही नस्ल की 1 बकरी और 1 बकरा 8000 रु में खरीदा और अपने स्तर पर उनका पालन शुरू किया।

उनको बकरियों में होने वाली बीमारियों के बारे में पूरी जानकारी होने के कारण समय पर उनका टीकाकरण करवाया। उनके रहने-खाने और साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखा। जिससे बकरियाँ स्वस्थ रहीं। इससे उत्साहित होकर उन्होंने और बकरियाँ खरीदी। बाद में इन बकरियों की संख्या में अच्छी वृद्धि हुई। फिर वे अपने घर का खर्च

चलाने के लिए हर साल इनमें से कुछ बकरे बेचने लगे। अब उन्हें खेती के साथ-साथ बकरी पालन से भी अच्छा मुनाफा मिलने लगा है। वर्तमान में उनके पास 24 बकरियां और 1 बकरा है। इसे देखते हुए उन्हें राजस्थान सरकार के कृषि विभाग की आत्मा योजना के तहत पंचायत समिति स्तर पर 10 हजार रुपए के कृषक पुरस्कार से सम्मानित होने का अवसर मिला।

इसके अलावा कम पढ़े-लिखे होने के बावजूद इनकी साहित्य लेखन में अच्छी रुचि है। उनका हौसला इतना बढ़ गया कि वे कृषि और पशुपालन की उन्नत तकनीकों को राजस्थानी भाषा में गीतों और कविताओं में ढालकर आकाश वाणी केन्द्र, पत्र-पत्रिकाओं, किसान मेले व गोष्ठियों में सस्वर सुना कर किसानों को प्रेरित करने लगे। वर्ष 2023 में उनके द्वारा लिखित राजस्थानी काव्य संग्रह (नारी नारां री खांन) का प्रकाशन राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के आंशिक आर्थिक सहयोग से किया गया है। "नारी नरां री खान" पुस्तक कई रंगों से रंगी हुई है। ये कहीं-कहीं पर मरूधरा की महक से महकती हुई, तो कहीं-कहीं पर "दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या" जैसी समाज में व्याप्त कुप्रथाओं पर करारा प्रहार करती हुई नजर आई है।

मरूधरा रा गाऊं गीत मैं,
प्यारो राजस्थान जी।
ईंण धरती में वीर नीपजे,
या वीरां री खान जी॥

"नारी नरां री खान" पुस्तक में कुण्डारा जी ने "दारू, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा" आदि दुर्व्यसनों से समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

दारू मांही तीन ओगण,
या करे नाश की आस।
धन दौलत अर ईज्जत खोवे,
करे डील को नाश॥

"नारी नरां री खान" पुस्तक में लेखक ने **"जोबन की खीर उफणगी"** जैसी श्रृंगार की कविताओं के माध्यम से पाठकों को श्रृंगार रस से सराबोर करने का भी प्रयास किया है।

जोबन की खीर उफणगी,
या च्यारूं मेरा ढुळगी।
थाळी में भर-भर पी जा रे,
गोरी का साजन प्यारा॥

इन सबके कारण मोहन लाल और उनके परिवार के चेहरों पर मुस्कान दिखने लगी है। अब वह खेती के साथ-साथ वैज्ञानिक विधि से बड़े पैमाने पर बकरी पालन करने की सोच रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि निर्माण के सहयोग और वैज्ञानिक विधि का इस्तेमाल कर वे भविष्य में बड़े पैमाने पर बकरी पालन कर और अधिक लाभ कमा सकेंगे।

■ **निर्माण सोसायटी,** चाकसू

साहस और संघर्ष से जीतती पूनी बाई

हेमलता रावत

"ओ मेडम किम जा रिया हो, मारी बकरी बीमार है रे, मारी बकरी देखो खोट्मी है के सही है"। यह सुनते ही पूनी बाई का चेहरा खिल उठता है। "बचपन में कभी स्कूल का मुंह नही देखा फिर भी आज गांव वाले जब मेडम कहते हैं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है" ये कहते हुए पूनी बाई की आंखें भर आईं।

पूनी बाई बताती हैं "मैं सीएमएफ संस्था में पिछले 8 वर्षों से काम कर रही हूं। शुरू के तीन साल तक पशु सखी बनकर काम किया और बीते 5 सालों से सामुदायिक सहजकर्ता के रूप में समुदाय के साथ उनकी आय बढ़ाने के लिए काम कर रही हूं। यह यात्रा इतनी आसान नहीं थी। खासकर तब, जब एक शादी-शुदा महिला का पति उसका साथ नहीं दे तो ऐसी यात्रा और भी कठिन हो जाती है।" यह कहते हुए पूनी बाई की आंखों से अश्रु धारा निकल पड़ी।

"सार्वभौम सागर के समान, साहस है प्रिय नारी का,

धरती पर बलिदान की मिसाल, है नारी का प्यारा प्यारा नाम।"

यह दोहा पूरा पूनी बाई पर चरितार्थ होता है।

पूनी बाई पहाड़कला गांव की रहने वाली हैं। यह गांव ठंडीबेरी पंचायत में आता है, जो पिण्डवारा ब्लॉक से 20 किमी पूर्व में है। यह राजस्थान के सिरोही जिले का आदिवासी बाहुल्य ब्लॉक है। इसकी ठंडीबेरी पंचायत में गरासिया जाति की 100 प्रतिशत आबादी रहती है। पूनी बाई की उम्र 29 साल है। उसके पति का नाम धन्नाराम है। उसके 3 बच्चे हैं। सबसे बड़ा बेटा है और 2 छोटी बेटियां हैं।

घर में सास-ससुर, 2 देवर और 3 ननद भी हैं। वह पशुपालन करती है, साथ ही साथ खेती भी संभालती है। पूनी बाई भी गरासिया समुदाय से ही आती है। वह कभी बचपन में स्कूल जाने के सपने तो देखती थी, मगर पिता नहीं होने के कारण घर के काम का भार मां के कंधों पर होने के कारण उसे बकरी चराने जाना पड़ता था। लेकिन, कहते हैं- जो सपना देखते हैं एक दिन वह पूरा जरूर होता है। पूनी बाई के साथ भी वही हुआ। एक दिन घर से बकरी चराने निकली और पहुंच गई बालिका आवासीय शिविर के अन्दर। वहां उसने अपने सपने को पूरा किया।

स्कूल नहीं जाने वाली बालिकाओं को पढ़ाने के लिए लोक जुम्बिश परियोजना की ओर से उस क्षेत्र में ऐसे शिविर लगाये जाते थे। पूनी के साथ बकरी चराने वाली 2 लड़कियां जब शिविर चली गईं तो उसका मन भी किया। लेकिन मां के मना किये जाने की वजह से वह उनके साथ नही जा सकी। एक दिन जब एक सहेली का मन शिविर में नहीं लगा और उसे छोड़ने के लिए लोक जुम्बिश वालों की गाड़ी आई। जैसे ही बकरी चराने गई पूनी को यह जानकारी मिली, वह भाग कर गाड़ी में चढ़ गई। उसने अपने घर सूचना भिजवा दी।

उसने केवल सात महीने में कक्षा सात पास कर ली और घर लौट आई। फिर अगले साल कक्षा 8 में सरकारी स्कूल में प्रवेश लिया। लेकिन घर का काम अधिक होने के कारण नियमित स्कूल नहीं जा सकी। जिसका परिणाम यह

हुआ कि वह फेल हो गई। इस वजह से उसकी आगे की पढ़ाई भी छूट गई। वह भी अपने क्षेत्र की दूसरी लड़कियों की तरह मजदूरी करने लगी। मजदूरी करना आसान तो बिल्कुल नहीं था। क्योंकि उसे पत्थर फैक्टरी में गाड़ी को भरना होता था। यदि गाड़ी पूरी नहीं भरती तो मालिक उनके सामान उठाकर फेंक देता और कहता कि कल मत आना। फिर भी उसने एक-दो साल तक वहां काम किया।

पूनी बाई ने 14 साल की उम्र में अपने समाज की रीति के अनुसार शादी कर ली। उस वक्त उसका पति कक्षा 8 में पढ़ रहा था। शादी के बाद पति ने भी पढ़ाई छोड़ दी। वह घर पर खाली ही बैठा रहता था। इसके बाद के 2 साल तक वह घर का काम करती रही। बाहर मजदूरी के लिए नहीं जाती

थी। लेकिन उसके परिवार का मजदूरी के लिए काफी दबाव था। इसी दौरान उसे एक लड़का भी हो गया। लड़का होने के बाद उस पर और अधिक मजदूरी के लिए दबाव पड़ने लगा। वह नही चाहती थी कि पत्थर भराई का काम करे। लेकिन दूसरा विकल्प नहीं होने के कारण फिर से वहीं पर मजदूरी शुरू की जहां पहले किया करती थी। यहीं से पति के साथ उसकी अनबन शुरू हुई कि वह कोई काम क्यों नहीं करता। फिर भी जैसे-तैसे 3 वर्ष और बीत गए।

एक दिन अचानक उसे आंगनवाडी केंद्र बुलाया गया। वहां महिलाओं की बैठक हो रही थी। बैठक में सीएमएफ़ संस्था के प्रतिनिधि भी थे। संस्था को उस गांव के लिए पशु सखी तैनात करनी थी। गांव की महिलाओं ने उससे पूछा "क्या आप अपने गांव की पशु सखी बनोगी ?" तो उसने हां में सिर हिलाया। यहां से तो मानो जैसे उसे नए पंख मिल गए हों। वह हर काम को बड़ी ईमानदारी और समय पर पूरा करती।

उसने 3 साल तक पशु सखी का काम किया। पशु सखी रहते हुए उसने खुद भी बकरी पालन का काम शुरू किया। साथ ही मुर्गीपालन भी शुरू कर दिया। इन सबसे उसकी साल की औसत आय 50 हजार रुपये से ऊपर होने लगी। सबसे पहले उसने गांव में बकरी पालक समूह का गठन किया। इसके बाद सभी महिलाओ को स्वयं सहायता समूहों में जोड़ा गया। उसके पास 50 परिवार थे, जिनकी बकरियों को नियमित टीका लगवाना, बकरियों के पेट के कीड़े मारने की दवा पिलाना, बकरी बीमार होने पर संस्था के पशुधन सहायक को बुलाना आदि काम वह बखूबी करने लगी।

महिलाओं को बकरे से कैसे अधिक आमदनी हो, इसके लिए वह उनको बकरों के बधियाकरण के लिए प्रेरित करती थी। सबसे पहले अपनी बकरों में कराती और अच्छा परिणाम आने पर दूसरों को इस बारे में बताती थी। शुरुआत में 2 बकरे खरीदे, जिन्हें 18,000 में बेचा। उसके बाद बकरों की संख्या बढ़ाती गई और 2023 आते-आते उसने 87,000 रुपये के बकरे बेचे। संस्था ने कई तरह से उसकी क्षमता बढ़ाई। उसे आगे पढ़ने के लिए भी प्रेरित किया।

उसने ओपन से आठवीं की परीक्षा दी और पास हो गई। इससे उसका आत्मविश्वास दोगुना हो गया। उसने दसवी कक्षा की परीक्षा भी पास कर ली। इसी दौरान वह एक संस्था प्रोत्साहित अरावली महिला बकरी उत्पादक कंपनी की सदस्य बन गई और अपने गांव की सभी महिलाओं को प्रेरित कर इसका सदस्य बना दिया। पशु सखी रहते हुए उसने अपने गांव की कई बीमार बकरियों को मरने से बचाया जिससे उसकी पहचान पशु सखी मेडम के रूप में होने लगी।

इस बीच वह पति और घर वालों के ताने भी सहन करती रही। पति उसे बात-बात पर मारता था। उस पर शक करता था और बिना बात के परेशान करता था। अक्सर वह

पूनी को घर से बाहर जाने से भी रोकता था। कई बार तो वह शराब पीकर उसे मारता था। इसी दरमियान उसके पति पर बलात्कार का आरोप लगा और उसे सजा हो गई। पूनी बहुत परेशान हुई और पति को छुड़ाने का भरसक प्रयास किया। परन्तु उसे जेल भेज दिया गया।

डेढ़ साल जेल में रहने के बाद पति को जमानत पर छोड़ा गया। पति को जेल से रिहा करवाने के लिए उसे लाखों रुपये खर्च करने पड़े। ये रुपये उसने अपनी मां और समूह से लिये थे। कुछ परिवार वालों ने भी वितीय मदद की, जिससे उसके पति को जमानत मिल पाई। उसका पति जब जेल में था तो ससुराल में परिवार ने उसे घर से बाहर निकालने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। लेकिन वह बहादुरी से मुकाबला करती रही। सास, ससुर ने उससे कहा कि "मेरा बेटा तो जेल चला गया। अब तेरा क्या काम है। घर छोड़ कर चली जाओ। परन्तु वह डटी रही। वह कहती थी "यह घर मेरा भी है मैं क्यों जाऊं।" उस दौरान उसे अन्दर ही अन्दर यह डर भी था कि घर पर अकेली रहती हूं। कोई रात को परेशान तो नहीं करेगा। इस वजह से वह हमेशा सतर्क रहती थी।

इधर जब पति जेल में था, तब संस्था को सहज कर्ताओ की जरूरत थी। पूनी के काम और ईमानदारी को देखते हुए उसे फेलो (सामुदायिक सहज कर्ता) बना दिया। अब उसे हर महीने दस हजार रुपये मिलने लगे। उसके काम की जिम्मेदारी भी बढ़ गयी। लेकिन एक गांव से दूसरे गांव में जाने के लिए परेशानी होने लगी। तब संस्था ने उसे स्कूटी सीखने के लिए प्रेरित किया और उसने अपनी आय में से कुछ बचत शुरू की। अपनी मां के सहयोग से जो खुद एक महिला स्वयं सहायता की सदस्य हैं, उन्होंने ऋण लेकर स्कूटी खरीदी। पूनी, जिसने बचपन में कभी साईकिल तक नहीं चलाई अब वह सड़कों पर स्कूटी दौड़ाने लगी। लेकिन इससे उसके ससुराल वाले और परेशान करने लगे। उसने हिम्मत नहीं हारी। वह घूंघट में स्कूटी चलाने लगी। सुबह निकलती और अपना काम ख़त्म करके वापस घर चली जाती। उसके पास बच्चो के लालन-पालन की भी जिम्मेदारी थी।

उसका पति जब जेल से रिहा होकर आया तब घर वाले और उसके पति दोस्त पूनी के खिलाफ कान भरने लगे। कहने लगे कि ये तो गाड़ी चलाती है, तुम्हारी गैरमौजूदगी में यह उसके पीहर भी नही गई। ससुराल वालों ने भी उसके कान भर दिये। अपने घर वालों की बातों में आकर पति ने उसको काम करने के लिए मना कर दिया। जब पूनी ने उसका कहना नहीं माना तो मार-पिटाई शुरू कर दी। जब स्थिति सहन से बाहर हो गयी तो वह परेशान होकर कुछ दिनों के लिए पीहर चली गयी। वहीं से काम करने के लिए आना-जाना शुरू किया। फिर भी उसके पति को तसल्ली नही थी। वह उसे रास्ते में रोक लेता था और उसके साथ गाली-गलौज करता था। इससे परेशान होकर उसने मां से कहा "धना राम मुझे रास्ते में बहुत परेशान करता है। मैं कैसे काम करूं।" तब उसके पीहर से कुछ लोग ससुराल वालों से आकर मिले।

पति ने पंचायत बुलाई। उसने कि पत्नी मेरा कहना नहीं मानती है। ससुराल पक्ष वालों ने पति का साथ देते हुए कहा कि जब धन्नाराम काम नही कराना चाहता तो उसे काम छोड़ देना चाहिए। पूनी ने जवाब दिया, “जब ये जेल में थे तो बच्चों का खर्चा किसने उठाया? क्या मुझे किसी ने भी मदद की। उल्टा मुझे तो घर से चले जाने के लिए बोल दिया। ये तो भगवान का शुक्र है कि मैं संस्था में काम कर रही हूं, जिससे अपना और बच्चों का गुजारा अच्छे से चला लेती हूं। धन्नाराम तो पहले भी मुझे पैसा नही देता था। मेरी एक ही शर्त है, यदि हर महीने में जितना कमाती हूं, उतना पैसा मुझे धन्नाराम लाकर दे देता है तो मैं ख़ुशी ख़ुशी काम छोड़ दूंगी।”

जब पंचों ने धन्नाराम से पूछा तो उसने कहा “मैं कहां से दूं, मेरे पास कोई कमाई नहीं है।“ इस पर पंचों ने कहा कि ठीक है, तब उसे काम करने दो। लेकिन परिवार वालों ने गाड़ी चलाने के लिए मना कर दिया। पूनी बाई ने फिर कहा कि मैं गाड़ी से नहीं जाऊंगी, अगर धनाराम मुझे गांव सुबह, शाम छोड़ने और लेने आ जाये? उसके प्रश्न का किसी के पास उत्तर नहीं था। धनाराम ने सुबह, शाम छोड़ने के लिए मना कर दिया। इस पर पंच बोले, तो उसे गाड़ी से काम पर जाने दो। उसे घूंघट में गाड़ी चलाने की इजाजत मिल गई। पूनी ने सोचा कि पतला ओढ़ना ओढ़ कर घूंघट निकाल कर गाड़ी चला लूंगी। इस तरह उसके पंचायत का फैसला हुआ और वह वापस ससुराल आ गई। घूंघट में गाड़ी भी चलाने लगी.

उधर, उसका पति फिर से पत्थर का काम करने लगा। पूनी बाई को लगा कि इससे उसे सिल्कोसिस बीमारी हो जाएगी। उसने समूह से लोन लेकर पति को ऑटो दिलवाया। इसके बाद भी पति कभी भी कमाई लाकर उसको नहीं देता था। जितना कमाता, सारा खर्च कर देता। इस पर कई बार उन दोनों में बहस हो जाती थी। वह बात मानता ही नहीं था। एक बार बहस इतनी बढ़ गयी कि वह उसको जलाने लगा। वह भाग कर घर में घुस गई और दरवाजा अन्दर से बंद कर दिया। पूनी ने आस-पास की महिलाओं को फोन किया, तब महिलाओ ने आकर उसे बचाया।

दूसरे दिन वह थाने पहुंची और आप-बीती सुनाकर शिकायत दर्ज की। उसके बाद पति घर से भाग गया और 2 महीने तक घर नहीं आया। जब बात ठंडी हो गई तब घर आया। जब पूनी से पूछा जाता कि ”तुम अपने पति को छोड़ क्यों नहीं देती हो,” इस पर वह जवाब देती कि बच्चों के खातिर इसके साथ रहती है। क्योंकि इनके समाज के अनुसार यदि कोई महिला पति को छोड़कर चली जाती है तो बच्चे उसे नहीं मिलते हैं। और पति का क्या है, वह दूसरी शादी कर लेगा। लेकिन उसके बच्चों का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा।

पूनी कहती है “मेरी तकलीफें ख़त्म ही नहीं होती हैं। वह यह भी जोड़ती है कि अब तो यही मेरी जिंदगी बन गई है। इनके साथ जीने की आदत हो गई है। वह कहती है कि मेरे बेटे और बेटियों को उच्च शिक्षा दूंगी ताकि जो मेरे साथ हो रहा है, बेटा किसी दूसरे की बेटी के साथ ना करे। बेटियां अपने पैरों पर खड़ी हो जायें। मै 500 महिलाओं के साथ उनको सशक्त बनाने का काम कर रही हूं, क्योकि उनके पास पैसा होगा तो संघर्षो का मुकाबला आत्मविश्वास के साथ कर सकेंगी। मुझे इतना साहस संस्था के कारण आया है। यदि मुझे यहां से मानसिक सहयोग और आगे बढ़ने की प्रेरणा नहीं मिली होती तो आज मैं वही काम कर रही होती जिसमें मान और सम्मान नही होता।“

■ **सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस,** सिरोही

लोग एकजुट हुए तो पानी की समस्या का भी निकला हल

राजू लाल गायरी

यह कहानी राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के चमलावदा गांव की है। यह पठारी इलाके में बसा गांव है। यह प्रकृति से जुड़ा हुआ है, यहां का वातावरण भी काफी साफ-सुथरा है। इस गांव में करीब सौ परिवार रहते हैं। लेकिन यहां सब कुछ अच्छा ही हो, ऐसा नहीं है।

यहां के लोग प्रकृति के करीब होते हुए भी खुश नहीं हैं। इसकी वजह है उनके सूखे गले। जी हां, इस गांव में प्रकृति ने बाकी सबकुछ तो दिया, पर पीने के लिए भरपूर पानी नहीं दिया। लेकिन इनसान चाहे तो क्या नहीं कर सकता। यह अलग बात है कि अपनी मंजिल तक पहुंचने के सफर में उसे कई तरह की बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। लेकिन, अगर वह होशियारी, साहस और धैर्य के साथ उन बाधाओं से निपटने की तैयारी रखे तो मंजिल हासिल हो ही जाती है। इस गांव की कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

इस गांव के एक मोहल्ले में एक ट्यूबवेल है, जिससे पानी की जरूरत जैसे-तैसे पूरी की जाती थी। इस ट्यूबवेल के पास 200 लीटर का प्लास्टिक कैन था, जिसमें पानी भरकर गांव वाले अपनी प्यास बुझाते थे। लेकिन गर्मियों में इसका पानी भी खत्म हो जाता था। इसी गांव के एक दूसरे मोहल्ले में एक कुंई है, जिसमें काफी गहराई से पानी खींचकर लोग अपने सूखे गले तर कर पाते थे। लेकिन इसका पानी भी गर्मी के मौसम में सूख जाता था। मजबूरी के चलते महिलाओं को पानी लाने के लिए काफी दूर तक पैदल सफर तय करना पड़ता था। कम से कम अगस्त 2023 तक तो गांव की यही हालत थी।

एक प्रयास से कैसे बदली सूरत

इस गांव में 2022 में प्रकृति फाउंडेशन संस्था की ओर से एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसी दौरान सरपंच तथा गांव के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्यामलाल जी मीणा, घनश्याम जी गायरी, शंकरलाल जी कुमावत ने संस्था के लोगों को गांव की पानी की समस्या के बारे में जानकारी दी। इसके बाद संस्था ने सर्वे किया और बताया कि गांव के पूरे 100 परिवारों के साथ ही स्कूल के 120 छात्र, छात्राओं और आंगनवाड़ी केंद्र के सभी बच्चों के लिए पानी की समस्या का समाधान किया जाएगा।

काम में आ गयी रुकावटें

किसी भी समस्या का समाधान इतनी आसानी से नहीं होता। इस गांव में हालात कुछ ऐसे ही बन गये। हुआ यह कि जब पानी की समस्या के समाधान के लिए संस्था ने 15 हजार लीटर की पानी की टंकी बनाने का फैसला किया तो दूसरे मोहल्ले वालों ने इसका विरोध शुरू कर दिया। दरअसल यह पानी की टंकी हनुमान जी के मंदिर और स्कूल के पास बनने जा रही थी, इससे दूसरे मोहल्ले वालों को लगा कि उनके लिए पानी की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाएगी, इसलिए वे इसका विरोध करने लगे।

लेकिन पंचायत के सहयोग और लोगों को अच्छी से समझाने-बुझाने पर वे टंकी बनाने पर सहमत हो गये। सबने इसके लिए ना केवल मंजूरी दी, बल्कि अपना सहयोग भी दिया। आखिरकार 15 सितंबर 2023 को इस टंकी के लिए नींव की खुदाई की गई और तब गांव वालों के दिल में यह आशा जगी कि अब उनकी पानी की समस्या दूर हो ही जाएगी। जब 15 हजार लीटर की यह टंकी बनकर तैयार हो गयी तो पाइप लाइन बिछाकर पानी की आपूर्ति दूसरे मोहल्ले तक भी पहुंचाई गयी ताकि गांव की एकता को बनाये रखा जाये। यही नहीं, पाइप लाइन से पास के स्कूल और आंगनवाड़ी तक भी पानी की धारा पहुंचायी गयी।

अब प्रकृति की हर नेमत इस गांव के पास पहुंच गयी है। यहां गर्मी के मौसम में भी महिलाओं को पानी लाने के लिए अब दूर तक पैदल सफर करने की कोई जरूरत नहीं है। वे केवल पानी का नल खोलकर ही न केवल पीने का बल्कि नहाने और खाना बनाने के लिए भी पर्याप्त पानी का इस्तेमाल कर सकती हैं।

गांव के स्कूल में अब छात्र और छात्राएं भी पानी के लिए मायूस नहीं होते। उन्हें भी केवल पानी के नल को ही खोलना पड़ता है। इसी तरह आंगनवाड़ी में जाने वाले मासूम बच्चों और उनकी माताओं को भी पानी की कोई दिक्कत नहीं होती। सभी अपनी जरूरत के मुताबिक पानी का उपयोग कर सकते हैं।

■ **प्रकृति फाउण्डेशन,** प्रतापगढ़

हेल्थ वैन से गांव तक पहुंचा सेहत का लाभ

दलपत चौधरी

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम में लूनी नदी के किनारे बसा है देदावास गांव। बाड़मेर जिले के तहसील मुख्यालय "गुडामालानी" से 30 किलोमीटर दूर बसे इस गांव तक पहुंचने के लिये टूटी-फूटी और ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़क से सफ़र तय करना पड़ता है। इस गांव में करीब 200 परिवार रहते हैं। ये मुख्यतः खेती और पशुपालन से आजीविका चलाते हैं। यहां फैले अंधविश्वास के कारण, आज भी कई परिवारों के साथ स्वच्छता और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर काम करने की जरूरत है।

इनमें से ही एक मेरा परिवार है। मेरे संयुक्त खेतिहर परिवार में माता (60 वर्ष), पिता (65 वर्ष), मैं स्वयं ओमाराम (36 वर्ष),पत्नी (32वर्ष) तथा दो लड़के और एक लड़की हैं। मैं खुद भी अक्सर अपने और परिवेश आदि की स्वच्छता को लेकर समझौता कर लेता था, जिससे मैं कई बार बीमार भी पड़ा।

एक बार शाम के वक्त खाना खाने के दौरान खाने में कीड़ा गिरने के कारण मुझे एलर्जी हो गई। स्वच्छता को लेकर जागरूक नहीं होने के कारण दिनों-दिन पूरे शरीर पर और परिवार के अन्य सदस्यों तक भी यह फैल रही थी। कई जगह से बार-बार इलाज भी लिया लेकिन कोई सुधार नहीं आया। पूरे शरीर पर फैल जाने के कारण शर्म और भेदभाव होने के डर की वजह से किसी को बता भी नहीं सकता था। एक रात मित्रों के संग गपशप के दौरान बातों ही बातों में पता चला कि सप्ताह के प्रत्येक बुधवार को 1 बजे के लगभग "केयर्न वेदांता" और "धरा संस्थान" की तरफ से "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" अपने गांव में आती है। इसके जरिए बिल्कुल नि:शुल्क जांच और इलाज होता है। मैंने इस विषय में और जानकारी लेने का प्रयास किया। धरा संस्था के सचिव महेश पनपालिया जी ने मुझे इस सचल मोबाइल हैल्थ वैन के बारे में पूरी जानकारी दी। यह जानकारी मुझे ख़ुश करने वाली थी, क्योंकि अब तक मैं बीमारी के साथ-साथ आर्थिक तंगी से भी परेशान हो गया था।

अब मुझे बुधवार का इंतजार था। लेकिन उस दिन तो रविवार था और मेरे पूरे शरीर पर लाल चकत्ते पड़ गये थे। तेज़ खुजली भी हो रही थी। मैं "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" क़े इंतजार में एक-एक दिन गिन कर निकाल रहा था। जब भी खेत में काम करता या फिर ट्रैक्टर चलाता तो "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" का ही बार-बार ध्यान आता। मैं सोचता कि कितनी जल्दी डॉक्टर से मिलूं और इलाज लूं, ताकि मैं भी बाकी लोगों की तरह ठीक हो जाऊँ। मुझे किसी से अपने शरीर को छिपाना नहीं पड़े।

आखिर वह दिन आ ही गया। आज़ बुधवार था। मुझे सुबह से "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" का इंतजार था। सभी जरूरी काम पूरे करते-करते 11 बज चुके थे। अब मुझे गांव

की चौपाल के लिये निकलना था, जहाँ हमेशा की तरह "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" आने वाली थी। मैने अपना आधार कार्ड लिया और चौपाल के लिये निकल पड़ा। वहां वहां पहुँचा तो देखा कि सभी लोग अपने-अपने इलाज के

लिए लाइन में बैठे हुये थे। मैंने भी लाइन में अपना नंबर लगा दिया।

अब लाइन में बैठे सभी लोग "सचल मोबाइल हेल्थ वैन" की राह देख रहे थे। तभी अचानक किसी की आवाज आती है, एम्बुलेंस आ गई। मेरा ध्यान भी उधर गया तो एक गाड़ी नजर आई, उस पर लिखा था "सचल मोबाइल हेल्थ

वैन"। लेकिन लोग शायद इसे एम्बुलेंस क़े नाम से ही जानते थे। अब सभी लोग लाइन में खड़े हो गये थे और एम्बुलेंस के पीछे एक-एक करके डॉक्टर को दिखा रहे थे।

अब मुझे भी डॉक्टर को दिखाना था। कुछ ही देर में डॉक्टर साहब मेरे सामने थे, जो बड़े ही धैर्य से अपने हर मरीज की जांच कर रहे थे। साथ में, एक एएनएम मैडम भी थीं, जो हाथ में में कुछ उपकरण लेकर जांच में मदद कर रही थीं। दूसरी तरफ लोग अपनी-अपनी पर्ची से एम्बुलेंस की खिड़की पर लाइन लगा कर दवाइयाँ ले रहे थे।

जैसे ही मेरा नंबर आया, डॉक्टर साहब ने हल्के से मुस्करा कर मुझसे पूछा, क्या हुआ पहलवान?

मैंने अपनी कमीज उठाई और बोला, मेरे पूरे शरीर पर इस प्रकार के लाल धब्बे हो गये हैं, लगातार खुजली भी होती है।

कितने समय से आपको यह दिक्कत हैं? - डॉक्टर साहब ने पूछा लगभग एक महीने से - मैंने बताया ओहो... काफी लंबा समय हो गया - डॉक्टर साहब ने बोला हां जी, बहुत परेशान हूँ... मैंने बताया घर में और कौन-कौन रहते हैं आपके साथ - डॉक्टर साहब ने पूछा माँ, पापा, पत्नी और बच्चे - मैंने बताया

यह इन्फेक्शन उनको भी हो सकता है। देख लेना। अगर दिक्कत है तो जांच करवा देना - डॉक्टर साहब ने बोला

हां जी, धन्यवाद.... मैंने बताया।

और हां, जो कपड़े और बिस्तर आपके इस्तेमाल में आ रहे हैं, नियमित धोकर धूप मे डालें - डॉक्टर साहब ने कहा।

मैंने एक बार फिर से धन्यवाद बोला और अपनी पर्ची लेकर एम्बुलेंस की खिड़की पर दवाइयाँ लेने पहुंच गया। दवाईयाँ लेकर घर की और बढ़ा। अब मैं ख़ुश था। डॉक्टर साहब के बताये अनुसार दवाईयाँ लेने के अलावा साफ-सफाई का भी ध्यान रखते हुये कपड़े धूप में डालता रहा। हर सप्ताह नियमित रूप से डॉक्टर साहब को दिखाया और दवाईयाँ लेने से मैं स्वस्थ हो गया। मेरे शरीर से लाल धब्बे भी गायब हो गये। अब खुजली भी नहीं होती है। अब भी जब मुझे टाइम मिलता है, प्रत्येक सप्ताह, एम्बुलेंस पर जाता हूँ और वहां स्टॉफ के साथ स्वच्छता, स्वास्थ्य और अंधविश्वास से जुड़े विभिन्न संदेह से अपने आप को स्पष्ट करता हूँ तथा जानकारी को अपने परिवार जनों और मित्रों के साथ साझा भी करता हूँ

■ **धरा संस्थान,** बाड़मेर

प्रतिभागी सूची

S. NO.	Name / नाम	Working area / कार्यक्षेत्र	Mobile No./ मोबाइल नम्बर	Email Id / ईमेल
1	Mohan dogaya	Sikar	8094019703	mldogaya007@gmail.com
2	Dalpat kumar	Badmer	9057295645	dalpat.dhara@gmail.com
3	Nagendra Singh Khangarot	Banswara	9828465903	khangarotns@gmail.com
4	Diksha Mahawar	Madar, Ajmer	7229885971	rcdsss@hotmail.com
5	Heeral Rawat	Ajmer	7412021258	rcdsss@hotmail.com
6	Alpana Sharma	Rohtak	7296800384	unnayans@gmail.com
7	Tulsi Meghwal	Girwa Block (Udaipur dist.) Rajasthan	9929550693	tulsi.meghwal@sevamandir.org
8	Mamta Chobisa	Khamnor Block, Raj-samand dist., Rajasthan	82903 99527	mamta.chobisa@sevamandir.org
9	Amar Singh	Jaipur district	8005594023	Amarlaporiya2@gmail.com
10	Hemlata Rawat	Sirohi	9829282105	hemlata@cmfraj.org
11	Mukesh kumar	Reodar Sirohi Rajasthan	9983384455	mukeshkumar@cmfraj.org
12	Mukesh Kumar Yogi	India	9660663776	mukesh_yogi@nirmaan.org.in
13	Raj Kumar Khatri	Media and Communication	9414362569	rkhatri@vaagdhara.org
14	Phool singh Jadoun	Dhara sanstha, barmer	6367848801	Psingh59@gmail.com
15	Dhiraj	Shrimadhopur	7798757408	dhirajwankhade91@gmail.com
16	Ramji Lal Bairwa	Agriculture & Language Development	9887748510	ramji_bairwa@nirmaan.org.in
17	Narendra Choudhary	Alwar	9664129333	narendrachoudhary767@gmail.com
18	Khem chand	Alwar	9610082146	mis.livelihoods@ibtada.in
19	Tanu kumari	alwar	7838932606	tanukumari@manjarifoundation.in
20	Deepak Sharma	Udaipur	7014661845	deepaksharma@manjarifoundation.in
21	Azrudeen	Alwar	9057297309	khanazru786@gmail.com

S. NO.	Name / नाम	Working area / कार्यक्षेत्र	Mobile No./ मोबाइल नम्बर	Email Id / ईमेल
22	Meghraj Meena	Jallara salumber	7877295936	meenamegraj147@gmail.com
23	Raju Lal Gayari	Pratapgarh	99831 32879	rajraj92618@gmail.com
24	Manish Kumawat	Pratapgarh	7689062071	mk2649807@gmail.com
25	Rajesh Kumar shyoran	Ringus, khandela	9610955172	rajesh1008786@gmail.com
26	Hemraj Didwaniya	Dudu	9784111614	hemraj tailor1985@gmail. com
27	Rameshwar Saini	Tonk	9680946355	rameshwarbheslana@gmail.com
28	Anjani Kumar	Bundi	9251910248	banjanikumar86@gmail.com
29	Mohammad Saquib Khan	Pratapgarh (Rajasthan)	9337919827	mohdsaquibkhan@srijanindia.org
30	Uday Kumar Saw	Karauli District, Rajasthan	7042731670	udaykumarsaw@srijanindia.org
31	Man Singh	Bahala	6377396034	mansingh198282@gmail.com
32	Madan Lal Jat	Ratlam	9829339682	madanbanahorti@gmail.com
33	Vijay Parashar	Jaipur	9530153078	unnayans@gmail.com

सहजकर्ता टीम

S. No.	Name	Organization	Contact Number
1	Kartik Sharma	Vikas Samvad, Bhopal	9425300456
2	Rakesh Malviya	Vikas Samvad, Bhopal	9977958934
3	Nidhi Tiwari	Vikas Samvad, Bhopal	9977742042

कार्यशाला में भागीदार साथियों की कुछ प्रतिक्रियाएं

कार्यशाला बहुत अच्छी रही समय थोड़ा कम मिला सभी साथियों ने मिलजुल कर सभी गतिविधियों की।

– मदनलाल जाट

विकास संवाद अच्छा कार्य कर रही है, आपके इस काम को हम अपने संस्था स्तर पर जो अन्य कार्यकर्ता क्या उनके साथ भी ऐसी कार्यशाला कर सकते हैं?

– हेमराज डिडवानिया

मेरी अपनी लाइफ में बहुत सारी स्टोरी है तो उसको लिखने का प्रयास करूंगी।

– तनुश्री

Make training more rigrous and tight so that it can be completed in 2 days instead of 3 days. more individual exercises amd some group exercises should alos include

– Amar Singh

आगे और एक वर्कशॉप हो और तीन दिन की वर्कशॉप बहुत ही शानदार रही।

– नरेन्द्र चौधरी

आपने बहुत ही बेहतरीन तरीके से सिखाया। यदि सम्पादकीय पर कार्यशाला करते हैं तो कृपया मुझे सूचित करें।

– नागेन्द्र सिंह खंगरोट

Keep organizing such activities in future so that we can break the narrative aboutvthe NGO and can become the agent of change.

– Uday Kumar Saw

Training days increasing more than 2 days

– Mukesh Kumar

कार्यशाला में भागीदार साथियों की कुछ प्रतिक्रियाएं

Will be interested in further workshop which can enhance my knowledge in speaking and presentations

– Deepak Sharma

ट्रेनिंग को तीन दिन की जगह 5 दिन की करनी चाहिए और सभी सहभागी को एक एक टास्क दे चाहिए की वो अपनी बेस्ट कहानी यही बनकर प्रस्तुत करे और ट्रेनिंग के समय बीच बीच में गेम भी खिलाना चाहिए ताकि ट्रेनिंग बोरिंग न लगे।

– मोहन दोगाया

I would suggest you to please conduct this training at our organisation level i.e SRIJAN atleast in MP and Rajasthan

– Md Saquib Khan

Keep inviting for more of such such workshops - would love to attend one on 'public speaking' as shared by you during the sessions - that you have been doing with other groups so far

– Raj Kumar Khatri

It was a great experience. Thank you so much!

– Heeral Rawat

एक ऐसा प्लेटफॉर्म तैयार करना चाहिए जहां पर जो लिखने के लिए उत्सुक हो वहां से उसको मदद मिल सके।

– दलपत कुमार

कार्यशाला की कुछ झलकियां